ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
- हमारे वीर विजयी हों

वर्ष : 30, अंक 9, 25 जनवरी – फरवरी, 2016 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सवत 1,96,0853,112

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा ● 10 वर्षीय शुल्क 700 रु. ● वार्षिक शुल्क 70 रु. ● यह अंक 10 रु.

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/–	अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/–
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/–	अन्दर का आधा (सादा)	2500/–
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/–	एक विज्ञापन पट्टी 250/– प्रति पृष्ठ, प्रति अंक	

ऋग्वेद

देव दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

यजुर्वेद

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

के.एल. महता दयानन्द पब्लिक स्कूल्ज़
के.एल. महता दयानंद महिला महाविद्यालय

देव दयानंद के सच्चे शिष्य बन
शिक्षा का अलख जगाया।
पूर्णाहुति में निज-उत्सर्ग कर
सेवा का धर्म निभाया।
ऋषि के सच्चे पथ पर चलकर
'महात्मा' वह कहलाया॥

महात्मा कन्हैयालाल महता

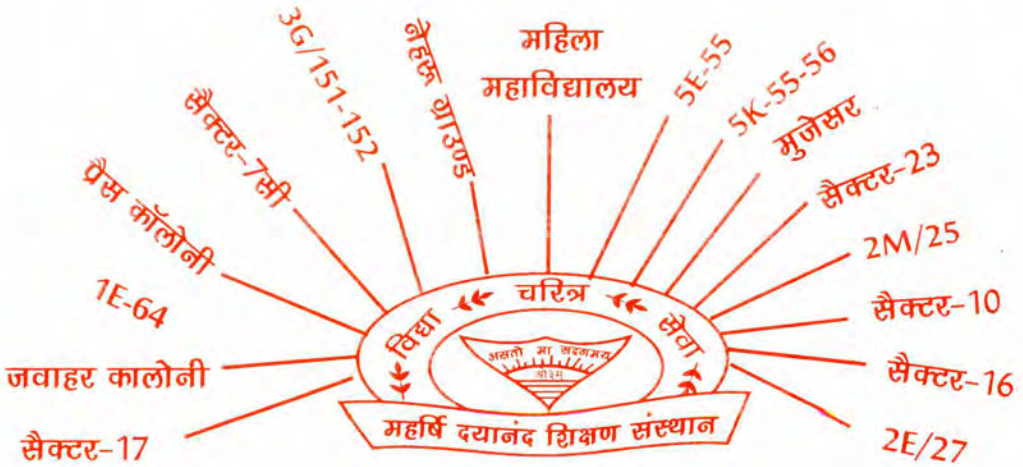

अथर्ववेद

सामवेद

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- मनोहर लाल आनन्द, प्रधान सम्पादक

1. अपना बुरे से बुरा राज्य भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा होता है। (महर्षि दयानन्द)
2. जो जिस वस्तु को पाने की इच्छा रखता है वह उसको अवश्य ही प्राप्त कर लेता है, यदि वह बीच में प्रयत्न को न छोड़ दे।
3. चापलूसी करना बहुत लोग जानते हैं लेकिन प्रशंसा करना किसी किसी को ही आता है।
4. हमारे जीवन में जो जो घटनायें घटती जा रही हैं वे पहले से निश्चित नहीं हैं।
5. मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है पर फल भोगने में परतन्त्र है।
6. मेरे कारण किसी की आंखों में आंसू तो मेरा जीवन निष्फल, मेरे लिये किसी की आंखों में आंसु तो मेरा जीवन सफल। हम अपना जीवन सफल बनायें।
7. संसार में दो प्रकार के व्यक्ति हैं, लेने वाले और देने वाले। हो सकता है लेने वाले व्यक्ति अच्छा खाते हो, पर देने वाले व्यक्ति सोते अच्छा है। अच्छा ही सीखें।
8. धर्म को धारण करने और व्यवहार में लाने से ही मनुष्य धार्मिक बनता है।
9. धर्म की जो रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है।
10. जो धर्म को मारता है, मरा हुआ धर्म उसको मार देता है।

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

महात्मा वेदपाल जी सम्मानित

आर्यजगत् के जाने माने त्यागी, तपस्वी, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और वैदिक परम्पराओं के परमभक्त, कर्मठ कार्यकर्त्ता, वीतराग, कार्यकत्ताओं के हृदय सम्राट महात्मा वेदपाल जी आर्य का एक भव्य समारोह में "मानव सेवा प्रतिष्ठान" दिल्ली के द्वारा 25 नवम्बर, 2015 को सम्मान प्रदान किया गया, जिसमें नकद राशि के साथ "अभिनन्दन-पत्र" उनकी सेवा में प्रस्तुत किया गया। हालांकि यह सम्मान लोकैषणा से दूर मान्यवर महात्मा जी के लिए कोई विशेष महत्व नहीं रखता तथापि सामाजिक एवं धार्मिक कार्यकर्त्ताओं के उत्साहवर्धन एवं प्रेरणा हेतु यह पुरस्कार अवश्य ही प्रेरणादायक है।

- आचार्य सत्यप्रकाश, आर्ष गुरुकुल, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

आर्य समाज ने खो दिया पुरोधा

आचार्य बलदेव आर्य समाज और गोरक्षा अभियान के मजबूत स्तम्भ रहे हैं। जीवनभर उन्होंने वैदिक शिक्षा और संस्कारों का प्रचार प्रसार किया और स्वामी रामदेव जैसे नायाब हीरों को तराशा। आचार्य बलदेव का ही आशीर्वाद रहा, जिसके चलते आर्य समाज की सौंधी खुशबू विश्व स्तर पर फैली और वैदिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ। उनके निधन के बाद जहाँ आर्य समाज का मजबूत किला ढह गया है, वहीं उनकी लाडली गाय अब उनके निधन के बाद लगभग सूनी हो गई है।

सोनीपत के सरगथल गांव में जन्मे आचार्य बलदेव ने 1971 में कालवा गुरुकुल को संभाला था। तब से लेकर अब तक इस गुरुकुल ने स्वामी रामदेव जैसे योग गुरु और कई वैदिक विद्वान पूरे विश्व को दिए हैं, जो आर्य समाज व योग का प्रचार कर रहे हैं। गुरुकुल कालवा के नजदीकी गांव धड़ौली की विश्वविख्यात गोशाला भी उन्हीं की देन है। जहाँ उन्होंने गो नस्ल सुधार के लिए अथक प्रयास किए। यह प्रयास रंग भी लाए, जब गोशाला धड़ौली में लगभग तीन करोड़ रुपये की लागत से भ्रूण सुधार केंद्र स्थापित हुआ। संघर्षशील जीवन के प्रतीक आचार्य बलदेव ने आर्य समाज को उस वक्त संभाला था, जब वर्ष 2003 में वह पूरी तरह बिखरा हुआ था। ग्रामीण क्षेत्र व पंचायतें भी आर्य समाज से दूरी बनाए हुए थीं। जिन गांवों में आर्य समाज का नामोनिशान बिल्कुल मिट चुका था, उन गांवों में आचार्य बलदेव के अथक प्रयासों से दोबारा आर्य समाज का सत्संग होने लगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रदेशाध्यक्ष बनने के बाद आचार्य बलदेव ने ओलंपिक खेलों में गोमांस परोसे जाने का जोरदार विरोध किया। उनका यह आंदोलन सफल रहा, जब खेलों में गोमांस नहीं परोसा गया। आर्य समाज के प्रचार को लेकर आचार्य बलदेव दिन-रात सक्रिय रहते थे।

करौंधा आश्रम के संचालक रामपाल ने वर्ष 2005 में जब गीता रहस्य नामक पुस्तक में महर्षि दयानंद के खिलाफ कुछ अपशब्द लिखे तो आचार्य बलदेव भड़क गऐ थे। उन्होंने करौंथा गांव के आसपास के गांवों में लगभग एक साल तक आर्य समाज का प्रचार कर वर्ष 2006 में आर्य समाज का बड़ा आंदोलन कर अंधविश्वास फैला रहे लोगों को वहाँ से खदेड़ा। हालांकि इस आंदोलन में आर्य समाज के एक युवक सोनू के प्राणों की आहूति चढ़ी। इसके बाद मई 2012 में जब रामपाल फिर करौंथा आश्रम पहुँचे तो आचार्य बलदेव डटे रहे और कानूनी तरीके से आश्रम को खाली करवाया। इस आंदोलन में भी तीन आर्य समाजियों को अपने प्राणों की आहूति देनी पड़ी थी। लेकिन आर्य समाज के मान-सम्मान को लेकर आचार्य बलदेव ने कोई समझौता नहीं किया। उन्होंने आर्य समाज को मजबूती देने के लिए कानूनन व जन आंदोलन छेड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

त्याग और सदाचार से भरा रहा जीवन- महाभाष्य पढ़ाकर बनाए वैदिक विद्वान

आचार्य बलदेव का जन्म सोनीपत जिले के सरगथल गांव में गूगन सिंह के घर में 25 अक्तूबर 1932 में हुआ था। आचार्य बलदेव का जीवन त्याग एवं सदाचार से भरा रहा। उन्होंने जाट कालेज रोहतक से एफएससी तक शिक्षा प्राप्त की। 1962 से 1971 तक गुरुकुल झज्जर में आचार्य स्वामी ओमानंद सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) के सान्निध्य में रह कर कार्य किया। 1971 से 2000 तक गुरुकुल कालवा में श्रद्धापूर्वक कार्य किया। सन् 1962 में गुरुकुल झज्जर में मुख्याध्यापक का पद संभालने से पहले आचार्य भगवानदेव जी के आदेश से गुरुकुल सिरसागंज में जाकर व्याकरण का अध्ययन किया। इसके बाद गुरुकुल झज्जर के स्नातक पं. राजवीर शास्त्री से बेरी

में रहकर इंद्रदेव ब्रह्मचारी के साथ व्याकरण महाभाष्य की शिक्षा क्रियात्मक रूप से प्राप्त की। आचार्य बलदेव ने गुरुकुल झज्जर में काशिका और महाभाष्य पढ़ाना आरंभ कर दिया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने अनेक विद्वान तैयार किए।

योगगुरु रामदेव और सतीश सहित आर्य कोहिनूर तराशे

स्वामी रामदेव, आचार्य बालकिशन, सतीश (अमेरिका), स्वामी विवेकानंद प्रभात आश्रम टीकरी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य दयानंद (कितलाना), स्वामी दिव्यानंद हरिद्वार, स्वामी चंद्रवेश टिटौली, स्वामी प्रणवानंद दिल्ली, डॉ. योगानन्द शास्त्री दिल्ली, डॉ. सुरेंद्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. धर्मवीर अजमेर, विरजानंद दैवकरणि, आचार्य विश्वपाल दाधिया, डॉ. यज्ञवीर दहिया (रोहणा), स्वामी रामवेश (जींद), महेंद्र कुमार पिलखुआ, आनंददेव शास्त्री खेड़ीजट, डॉ. आनंद कुमार गृह मंत्रालय दिल्ली, डॉ. कृष्णदेव सारस्वत उड़ीसा, डॉ. विक्रम कुमार विवेकी, आचार्य विजयपाल (मकड़ौली कलां, रोहतक) आदि दर्जनों शिष्यों को पढ़ाया।

घर छोड़ने के बाद गांव नहीं गए, सीमा से लौट आते थे

आचार्य बलदेव के छोटे भाई राम सिंह के बेटे वेदपाल और राजपाल बताते हैं कि उन्होंने आर्य समाज के लिए करोड़ों रुपये दान एकत्रित किया, लेकिन कभी अपने हाथ में पैसा नहीं लिया। जब उन्होंने गांव छोड़कर गृह त्याग किया तो उसके बाद कभी भी घर नहीं लौटे। वे गांव की सीमा तक आते थे और फिर लौट जाते थे। वे एक ही बात कहते थे कि अगर मैं गांव के अंदर आया तो मुझे लोभ आ जाएगा। मैं ऐसा नहीं होने देना चाहता। जब पिता का निधन हुआ तो उन्हें सूचना दी तो वो बोले, एक दिन सभी को जाना है। आज आचार्य हमारे बीच मौजूद नहीं रहे, लेकिन उनके संस्मरण और उनकी शिक्षा हमें याद है। हम सभी उनके दिखाए रास्ते पर चलेंगे।

(साभार : 'हरिभूमि' से)

उद्‌बोधन

- ले. कविवर प्रकाश

वह काम करो जिससे सुखी अपना वतन हो।
हो राम राज्य फिर से राक्षसों का दमन हो।।

किस काम का लहू, नहीं जिसमें उबाल हो,
वो आंख ही क्या, देख सितम जो न लाल हो,
वो हाथ ही क्या, जो न गरीबों की ढ़ाल हो,
वह दिल भी कौन काम का जिसमें न लगन हो।
वह काम करो जिससे सुखी अपना वतन हो।।

नवयुवको! राष्ट्र का तुम्हारे सिर पै भार है,
तुम जागरुक हो तो शीघ्र बेड़ा पार है,
तुम कर्णधार! तुम में ओज बल अपार है,
भारत वसुन्धरा के तुम्हीं लाल रतन हो।
वह काम करो जिससे सुखी अपना वतन हो।।

पैदा करो प्रत्येक जन में भारतीयता,
हो दूर साम्प्रदायिकत्व, प्रान्तीयता,
आपस में हो सहानुभूति, आत्मीयता,
उन्नति किसी की देख के मन में न जलन हो।
वह काम करो जिससे सुखी अपना वतन हो।।

★ ★ ★

जो व्यथाएं प्रेरणा दें, उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझ कर कठिनाइयों से रंग जीवन का निखारो।।
दीप बुझ बुझ कर जला है, वृक्ष कट कट कर बढ़ा है।
मृत्यु से जीवन मिले तो आरती उसकी उतारो।।

(साभार : देश भक्ति की कविताओं से)

महर्षि दयानंद के सच्चे सपूत (श्रद्धा सुमन)

दिल्ली सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी बलदेव जी महाराज का महाप्रयाण। 28 जनवरी 2016 का सूर्य मानो एक बार फिर निस्तेज हो गया। रात भर बरसी हुई ओस उस प्रातःकाल की बेला में मानो रात्रि के निःशब्द आँसुओं की गाथा कह रही थी।

28 जनवरी का दिन फरीदाबाद के लिए महात्मा कन्हैयालाल महता का 'स्मृतिदिवस' होता है, जिसे 'प्रेरणा दिवस' के रूप में समर्पित किया जाता है। उन्हें 'महात्मा' की उपाधि भी स्वामी बलदेव जी महाराज द्वारा इस मंच से ही विभूषित की गई थी।

अपने अभिन्न मित्र के प्रति उनके हृदय में अपार स्नेह था। वह वर्ष भर मानो इस विशेष दिन की प्रतीक्षा करते। यहाँ आते और भाव-विभोर होकर अपने उद्‌गार व्यक्त करते। पिछले दो वर्षों से अपने गिरते हुए स्वास्थ्य के कारण वह उपस्थित नहीं हो पाए पर सशरीर न होते हुए भी वह मन से यहीं रहते।

कैसा विचित्र संयोग कि अपनी देह से मुक्त होने का दिन भी नियति ने उन्हें वही दिया जो काल की क्रूर दृष्टि ने उनके मित्र महता जी को दिया था। परमपिता परमात्मा ने दो पवित्र आत्माओ को पुनः एक साथ कर दिया।

उनका जाना, शोक का कारण नहीं हो सकता क्योंकि वे आजीवन 'विदेही' रहे। उनके दिखाए गए आदर्श उनके आर्य मूल्य पूरे आर्य समाज की अतुलनीय संपदा है और यदि उस धरोहर की हम समूचित रक्षा कर सकें, उसका विकास कर सकें तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- डॉ. विमल महता, प्रधाना,
आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद एन.आई.टी.

परोपकार ही जीवन की सार्थकता है

झज्जर। महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में स्व. माता धापा देवी की पुण्य तिथि के अवसर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। जिसके संयोजक महाशय रतीराम आर्य रहे व यज्ञ संचालन का कार्य 4 वर्षीय बेटी मनस्विनी व 8 वर्षीय अनमोल आर्य ने किया। रितिका, श्रद्धा, रितु, नन्दनी, दीक्षा, रेखा, काजल, मिनल, प्रिया, कशिश, कल्पना, कनिष्का, तन्नु आदि 22 होनहार बेटियों को उनके स्वयं के नमस्ते लेमिनेटिड फोटो से सम्मानित किया गया। मुख्य वक्ता जीन्द (हरियाणा) से पधारे प्राकृतिक चिकित्सक डा. सूर्यदेव योगाचार्य रहे। उन्होंने कहा कि योग को दैनिक दिनचर्या में शामिल करना चाहिए ताकि सभी निरोग रह सके। उन्होंने अनेक योगी क्रियाओं को प्रदर्शित किया और उपस्थित समुह को उसके लाभ बताए। नर्सरी की छात्रा बेटी मनस्विनी को दैनिक यज्ञ के सभी मन्त्र कंठस्थ है। उन्होंने सूर्य नमस्कार, योगिक जोगिंग, सुक्ष्म व्यायाम, प्राणायाम और लगभग 40 आसनों का भव्य प्रदर्शन किया। इस अवसर पर 90 वर्षीय श्रीमती अशरफी देवी व श्रीमती केसर देवी को भी सम्मानित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. रमेश चन्द्र कौशिक ने

की। उन्होंने कहा कि परोपकार ही जीवन की सार्थकता है और यज्ञ परोपकार का सबसे उत्तम कार्य है, जिसके करने से सभी को लाभ पहुंचता है और पर्यावरण को शुद्ध करके संसार को निरोगी बनाता है। मंच संचालन विजय आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर पठानकोट हवाई अड्डे पर होने वाले शहीदों को भी श्रद्धांजलि प्रदान की गई। श्री केहर सिंह दलाल, सूबेदार भरत सिंह, पं. जयभगवान, श्री भगवान सिंह, राव औमप्रकाश, रमेश सैनी, आचार्य शतक्रतु, रामपत, चिमन लाल, मामकौर देवी, सुमित्रा देवी, आचार्या गार्गी, सीता देवी, सन्तोष, सरोज, सोनिया, अनिल कुमारी आदि अनेक महिला पुरुष उपस्थित रहे। - **सुभाष आर्य**, झज्जर।

क्रान्तिकारियों के प्रेरणा-स्रोत श्याम जी कृष्ण वर्मा

– स्व. नरेन्द्र अवस्थी

उन्नीसवीं शताब्दी में राष्ट्रीय जागरण के अग्रदूत युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द ने अपने प्रखर, तेजस्वी एवं क्रान्तिकारी विचारों के लिए वेदों से प्रेरणा ग्रहण की। जिन वेदों ने 'अदीना स्वाम शरदः शतं' कहकर सौ वर्ष पर्यन्त मनुष्य को अदीन एवं स्वाधीन होकर जीवन धारण करने का आदेश किया, उनका अनुयायी भला देश के स्वातन्त्र्य समर में किस प्रकार विमुख रह सकता था। स्वातन्त्र्य की अर्चना के मन्त्रदृष्टा युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के अनुयायियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसात्मक ढंग से सत्याग्रह व सशस्त्र क्रान्ति के माध्यम से बढ़-चढ़कर भाग लिया। यही कारण है कि योगी अरविन्द ने स्वामी दयानन्द के राष्ट्रीय भावों का मूल्यांकन करते हुए लिखा "उनमें राष्ट्रीय भावना थी और उन्होंने उस भावना को एक आत्मानुभूति का रूप देकर उसे ज्योतिर्मय बना दिया।"

आर्य समाज के प्रवर्तक दयानन्द के परम शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा क्रान्तिकारी गतिविधियों के जनक माने गए हैं। उनकी विलक्षण प्रतिभा तथा संस्कृत साहित्य में उनकी अपूर्व गति को लक्ष्य में रखकर स्वामी दयानन्द ने उन्हें इंग्लैंड जाकर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत का प्राध्यापक पद स्वीकार कर लेने की प्रेरणा दी थी। कालान्तर में वे पुनः भारत आए, परन्तु राजनैतिक गतिविधियों के अनुकूल वातावरण न देखकर पुनः ब्रिटेन चले गए। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने क्रान्तिकारी संगठन का जो बीजारोपण किया वो हजारों युवकों के त्याग और बलिदान से पल्लवित और पुष्पित होने लगा।

क्रान्तिकारी विचारधारा के सूत्रधार श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को माण्डवी (गुजरात) में हुआ। 1857 का वर्ष हमारे इतिहास में भारत के प्रथम स्वातन्त्र्य समर के नाम से अविस्मरणीय है। वर्मा जी की शिक्षा-दीक्षा बम्बई में हुई, उन्होंने उच्च आधुनिक शिक्षा एवं संस्कृत का असाधारण ज्ञान व मेधावी छात्र होने के कारण बम्बई में लोकप्रिय समाज सुधारक के रूप में ख्याति अर्जित की थी। 1875 ई. में बम्बई में युगस्रष्टा महर्षि दयानन्द जी बम्बई पधारे, उनके चिन्तन से अत्यधिक प्रभावित होकर श्याम जी कृष्ण वर्मा उनके परम शिष्य बन गए 1879 में महर्षि दयानन्द के कथन पर ही आप इंग्लैंड पहुंचे, वहाँ संस्कृत एवं अन्य प्राच्य भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान के रूप में आप माने जाने लगे। वहाँ बुद्धिजीवियों-राजनीतिज्ञों में आप बुद्धिचातुर्य व असाधारण सूझबूझ के कारण काफी लोकप्रिय हो गए। आपने वहाँ के राजनीतिक वातावरण का गहनता से अध्ययन किया। भारत के सन्दर्भ में आपने ये निष्कर्ष निकाले-1. स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए अंग्रेजी साम्राज्य से संघर्ष अनिवार्य है 2. सांस्कृतिक पुनरुत्थान के द्वारा राष्ट्रवाद के चिन्तन को जागृत किया जा सकता है ।3. रजवाड़ों के विचारों में परिवर्तन लाना आवश्यक है। आर्य समाज का सांस्कृतिक पुनरुत्थान का कार्य स्वामी दयानन्द ने किया था, बड़ौदा, कोल्हापुर, इन्दौर व राजस्थान के रजवाड़े स्वामी जी के सुधार कार्यों में सहयोग दे रहे थे, ये शुभ संकेत थे। 1879 से 1885 तक के प्रवास के दौरान क्रान्ति पुत्र श्याम जी कृष्ण वर्मा ने अपने आपको राष्ट्रहित में समर्पित किया और कानून की भी पढ़ाई पूरी कर बैरिस्टर बने।

1885 ई. में आप भारत लौटे। उन दिनों सांस्कृतिक जागरण के माध्यम से राष्ट्रवाद की भावना भारतीय जनमानस में उभरने लगी थी। इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी। आप 1885 से 1897 तक भारत में रहे। इस अवधि में आप रतलाम (मध्य प्रदेश) मेवाड़ (राजस्थान) जूनागढ़ (गुजरात) में दीवान बने। अजमेर नगरपालिका के गैरसरकारी अध्यक्ष भी बने। भारत में औद्योगीकरण को

प्रात्साहित करने के विचार से राजस्थान काटन मिल, प्रताप कॉटन मिल आदि कारखानों की स्थापना की। दीवान के रूप में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने राष्ट्रवादी समाचार पत्रों और प्रचारकों को भारी अनुदान दिया। भारतीय रजवाड़ों की स्थिति का जायजा लेकर 'स्वाधीनता संग्राम' की रूपरेखा तैयार की। इन्हीं कार्यकलापों की भनक अंग्रेज अधिकरियों तक भी पहुँची।

1897 में आप पुनः विदेश गए, लन्दन में रहकर श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भारतीय स्नातकों को संगठित किया। उन्हीं के प्रयत्नों से स्वातन्त्र्यवीर सावरकर, लाला हरदयाल, मैडम कामा, क्रान्तिवीर मदनलाल ढींगरा, वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय सरीखे महान देशभक्त पारस्परिक सम्पर्क में आए। आपने इंग्लैंड में इण्डिया हाऊस की स्थापना भी की। 1897 से 1907 में आपकी गतिविधियों में बड़ी सक्रियता रही। शेर की मांद में घुसकर अदम्य साहस का परिचय देने में आपका पूरे इतिहास में कोई सानी नहीं मिलता। देश में चल रहे स्वराज्य आन्दोलन और क्रान्ति के प्रति उनका भावनात्मक लगाव अन्तहीन था। वे अपनी मातृभूमि की सेवा के लिए सदैव सर्वस्व होम करने के लिए तैयार रहते थे। 1905 में लन्दन में भारतीय गृह नियम सोसायटी (इण्डियन होम रूल सोयायटी) गठित की। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आपने प्रचार सभाओं के माध्यम से लोगों को एक सूत्र में पिरोना आरम्भ किया। वर्मा जी ने बहुत जल्द ही छह छात्रवृत्तियों की घोषणा की। इनमें एक छात्रवृत्ति देने की जिम्मेदारी विनायक दामोदर सावरकर ने उठाई।

इण्डिया हाऊस में एकत्र हुए भारतीय युवकों में सावरकर सबसे अधिक प्रभावी व सक्रिय थे। उन्होंने बहुत जल्दी ही अभिनव भारत समाज के नाम से भारत में अपनी एक गोपनीय सोसायटी का भी गठन किया। वीर सावरकर से प्रभावित होने वाले युवकों में मदनलाल ढींगरा भी थे। उन्होंने भारत के सेक्रेटरी सर विलियम कर्नल वायली के ए.डी.सी. की अपनी नौकरी छोड़ देने का निश्चय किया। उन्होंने लन्दन में भारतीय छात्रों की गतिविधियों का पता लगाना शुरु किया। भारत में उस द्वारा किए गए अत्याचारों का पुरस्कार देने के लिए एक जुलाई 1909 को मदनलाल ढींगरा ने नेशनल इण्डियन एसोसिएशन की एक बैठक में उसे गोली से उड़ा दिया। विदेशी भूमि पर शहादत को प्राप्त करने वाला भारत माता का यह पहला सपूत था। श्याम जी कृष्ण वर्मा भी सरकारी दमन का मुंहतोड़ जवाब देने वाले मदनलाल ढींगरा सरीखे युवकों की प्रशंसा करते थे।

राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम चल ही रहा था कि प्रथम विश्व युद्ध (1914-18 ई. में) शुरु हो गया। श्याम जी कृष्ण वर्मा भी अंग्रेजों के शत्रु जर्मनी से इस आजादी की लड़ाई में सहयोग लेने के इच्छुक थे। गदर पार्टी ने थाईलैंड और वर्मा के मार्ग से भारत पर आक्रमण का प्रयत्न किया थोड़ी बहुत सफलता मिली थी। परन्तु जर्मनी के पराजित होने पर ये सब प्रयत्न भी असफल हो गए। 1914 ई. में लोकमान्य तिलक जेल से रिहा हुए उन्होंने होमरूल आन्दोलन फिर से संगठित किया और दस वर्षों में अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को उखाड़ को उखाड़ फेंकने की योजना बनाई। मगर 1 अगस्त 1920 को लोकमान्य तिलक इस संसार से विदा हो गए। अदम्य साहस के धनी श्याम जी कृष्ण वर्मा भारत को मुक्त कराने के संकल्प से विचलित नहीं हुए। एक ओर उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन का समर्थन किया तो दूसरी ओर अमेरिका के राष्ट्रपति विलसन और विश्व लीग से भारत की स्वतंत्रता के लिए अनुरोध किया। मातृभूमि से दूर, रोम-रोम राष्ट्रहित समर्पित राष्ट्रभक्ति के धधकते ज्वालामुखी श्याम जी कृष्ण वर्मा 31 मार्च 1930 को गोवा में अपने प्राण त्याग गये। सच तो यह है महर्षि दयानन्द के परम भक्त श्याम जी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व का राष्ट्रीय आन्दोलन में भारी सहयोग का मूल्यांकन शब्दों से नहीं किया जा सकता। शायद ऐसे ही परम देशभक्तों के लिए राष्ट्रकवि दिनकर की लेखनी पुकार उठी **'कलम तू उनकी जय बोल'**। ●

भारत के आर्य मूलतः भारतीय हैं विदेशी नहीं

- राम अवतार गोयल

भारत की सुषुप्त अस्वस्थ सामाजिक व्यवस्था में, उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाने एवं सत्य के हनन हेतु, कुछ स्वयंभू बुद्धिजीवियों और उनके साथ चलने और चलाने वाले वामपंथियों द्वारा एक निश्चित योजना के अधीन अत्यंत भ्रमपूर्ण एवं प्रश्नचिन्हित मिथकों को बढ़ावा दिया जाना, एक अद्यतन उदाहरण है, यह भ्रमित विचारधारा लगभग तीन शताब्दियों से भी अधिक समय से दुष्प्रचार का माध्यम बनाई गई है, इसका आधार अत्यंत सार रहित होते हुए भी यह विचार बार-बार और निरंतर फैलाया जाता है कि भारत के आर्य इस देश के मूल निवासी नहीं थे और वे भी अन्य आततायियों तथा आक्रामकों की भाँति ही विदेशों से आकर भारत के मूल निवासियों को त्रस्त करके, उन्हें अपने अधीन लाकर, भारत में लुटेरों की भाँति राज्य करने लगे। इस धारणा अथवा मान्यता का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं होता न इसके सम्बन्ध में कोई पुष्टि या साक्ष्य ही प्राप्त है, फिर भी विदेशी विचारधारा के अधीन मानसिक दासता के कारण भारतीयों पर यह आरोप थोपा जा रहा है और उन्हें बदनाम किया जा रहा है।

इस विषय में कुछ तथ्य इस प्रकार हैं:-

1. आर्य लोगों की सबसे प्राचीनतम मान्य, विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक पुस्तक वेद है, यह सर्वमान्य है, वेद विश्व की सर्वप्रथम लिपिबद्ध पुस्तक है और उससे पूर्व मौखिक रूप से श्रुति द्वारा एक से दूसरे व्यक्ति को शताब्दियों तक वेद संदेश ज्ञानरूप में एक पीढी से दूसरी पीढी तक दिए जाते रहे, यदि आर्य लोग बाहर से आए थे तो जो वैदिक ज्ञान उनके द्वारा भारत वर्ष में सर्वत्र प्राशित किया गया था, वह ज्ञान उससे पूर्व उस विदेशी भूभाग में भी होना चाहिए था, जहाँ से आर्यलोग भारत में आए कहा जाता है तभी तो वे भारत में आकर वेद ज्ञान फैला सकते थे परंतु इतिहास में सारी सृष्टि में वेदों से पूर्व कोई ऐसा साहित्य अथवा ज्ञान भारत के बाहर उपलब्ध होने का पता नहीं लगता, अतः यह कैसे मान लिया जाए कि आर्यलोग विश्व के किसी अन्य भू भाग से यहाँ आकर बसे थे।

2. श्री आर.एस. शर्मा, जिन्होंने 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान परिषद्' (NCERT) की कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्य पुस्तक 'प्राचीन भारत' का संपादन किया है, उसमें पृष्ठ संख्या 70 पर निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं - "आरम्भ में आर्य लोग विश्व के दक्षिणी रूस में मध्य एशिया के किसी भूभाग के रहने वाले थे। उनके पशुओं के नाम जिनमें बकरियाँ, कुत्ते व घोड़े आदि आते हैं और कुछ वनस्पतियाँ जैसे चील व मेपेल आते हैं, वे भारतीय एवं यूरोपीय भाषाओं में एक से दिखाई देते हैं। इससे पता चलता है कि आर्य लोग नदियों और जंगलों से परिचित थे तथा यद्यपि भारत में आने वाले आर्य अनेक पहाड़ों को पार करके भारत में आए तो भी उन पहाड़ों के कतिपय नाम आर्य भाषाओं में पाए जाते हैं।" विद्वान लेखक श्री आर.एस. शर्मा इससे क्या सिद्ध करना चाहते हैं, कुछ समझ पाना कठिन है। एक सी भाषा का प्रयोग करने वाले या बोलने वाले लोग यह आवश्यक नहीं कि एक ही पूर्वज की संतान हों। अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, स्पेनी, पुर्तगाली, चीनी, रूसी अथवा हिन्दी भाषी आवश्यक नहीं, कि एक ही परिवार से उत्पन्न हुए हों। प्रसिद्ध इतिहासवेता श्री विन्सेंट ए. स्मिथ ने आक्सफोर्ड भारत के इतिहास में (पुस्तक पृष्ठ संख्या 40 संस्करण 1957) लिखा है कि भाषा रक्त की साम्यता का प्रमाण नहीं है 'Language is no proof of commonality of blood'.

3. अतः सरकार की भ्रमपूर्ण धारणा ऐसे मिथक को जन्म देती है कि बड़े-बड़े विद्वान लोग मिथ्या विचारधाराओं से ग्रसित होकर उक्त भ्रम से बाहर निकलने में अपने को असमर्थ पाते हैं तथा अन्य जो इस बात से सहमत नहीं होते, उनको अज्ञानी व अन्धविश्वासी समझने व कहने लगते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि ऐसे स्वयंभू विद्वान आत्मनिरीक्षण करके देखें तो पता लगेगा कि उनकी धारणा तथ्यवीहीन है। इस विषय में श्री आर.एस. शर्मा द्वारा सम्पादित (NCERT) की उपरोक्त पाठ्यपुस्तक को ही लिया जाये तो वे स्वयं पृष्ठ 71 संस्करण जून 1999 पर स्वीकार करते हैं कि : "सन् 1500 ई. पू. आर्य लोग भारत में दिखाई दिए पर उनके भारत में आने का कोई स्पष्ट तथा संपूर्ण विश्वसनीय तथ्य पुरातत्व ज्ञान द्वारा साक्ष्य नहीं होता।" इस पर भी यह धारणा फैलाई जाए कि आर्य लोग बाहर से आए थे, केवल हास्यास्प्रद ही है। क्योंकि जब ये

बुद्धिजीवी तथा इतिहासवेता स्वयं मानते हैं कि उनके पास कोई पुरातत्व साक्ष्य अपने प्रस्ताव के समर्थन में मौजूद नहीं है। ऐसा लगता है कि समस्त अभियान का एक ही मूल स्रोत है कि किसी प्रकार से आर्य लोगों को अन्य हमलावरों के तुल्य रख दिया जाये और उन्हें भी आततायी श्रेणी में खड़ा किया जाये जिससे कि उनको परवर्ती शक, हूण, यूरोपियन, अरबी, ईरानी, अफगानी एवं दूसरे धर्मावलम्बियों व विदेशियों के बराबर ही समाविष्ट किया जाए।

4. हमारे इस आलेख का अभिप्राय यह है कि हम इस बात को भली प्रकार समझें और बिन संदेह के समझें कि आर्य लोग भारत के मूल निवासी थे और वे बाहर से नहीं आए थे। इसके विपरीत धारणा या विश्वास इतिहास विरुद्ध है तथा असत्य है। प्रश्न पैदा होता है कि क्या कारण है कि यह धारणा कि आर्य लोग बाहर से भारत में आए थे, मान्यता प्राप्त कर सकी। यह केवल मात्र कपोलकल्पना है। इस विषय में प्रस्तुत विश्लेषण से निम्न तथ्य स्पष्ट होते हैं :

(क) आक्स्फोर्ड भारत का इतिहास में पृष्ठ 32 पर इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ ने निम्न विचार प्रस्तुत किए हैं : "यह प्रस्तावना कि आर्य लोग बाहर से आए थे, वे आंकता है और उन्होंने मूल भारत निवासी काले मोटी नाक वाले दस्यु लोगों को अपने अधीन कर लिया था केवल वैदिक मन्त्रों के आधार पर ही रची गई है।

(ख) इसी पुस्तक के पृष्ठ 53 में यही विद्वान् लिखते हैं कि "यह मानी हुई धारणा कि आर्य लोग मध्य एशिया से भारत में आए, ऋग्वेद की संहिताओं पर एवं भूगोलीय इशारों पर आधारित हैं, इसका कोई प्रत्यक्ष सीधा प्रमाण नहीं है कि आर्यों का भारत से बाहर कोई अन्य मूल निवास था।

(ग) उपरोक्त से स्पष्ट है कि विद्वान लेखक स्वयं मानते हैं कि उनके पास अपनी इस धारणा के लिए कि आर्य लोग बाहर से आए, सिवाय वेदमंत्रों के, कोई अन्य साक्ष्य नहीं है। वेद मन्त्रों का सही आकलन एवं अनुवाद वेद ज्ञाताओं को छोड़कर अनुवाद से पढ़ने वाले जोन्स अथवा मार्क्स मनीषी द्वारा किया जाना वेदों का उपहास है परिहास नहीं।

अतः स्पष्ट है कि अनुवाद से लिया गया निष्कर्ष पूर्ण सत्यता का दावा नहीं कर सकता।

5. अब हम इतिहास के तथा अन्य तथ्यों का अध्ययन करें जो आर्य लोगों की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, राज्य, शैली, समाज शास्त्र पर प्रकाश डालते हैं :

(क) यह सर्वमान्य है कि विश्व के इतिहास में ईसा से चौथी शती पूर्व केवल दो लिपियाँ ही थीं जो एशिया में प्रचलित थीं। खरोष्टि लिपि जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी और दूसरी ब्राह्मी लिपि थी जो बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। यदि आर्य लोग ब्राह्मी लिपि के अभ्यस्त थे और उनकी भाषा बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी तो यह सत्य की तिलांजलि है कि वे किसी ऐसे पूर्वज की संतान थे जिनकी लिपि खरोष्टि थी। इस तथ्य का प्रमाण 'Encylopedia Britanica' के पार्ट 14 के पृष्ठ 228 पर उपलब्ध है।

(ख) लोगों का आना-जाना एवं मेलजोल कोई ऐसा साक्ष्य नहीं है कि उनके पूर्वज एक ही हों, व्यापारियों के जो आपसी माल का क्रय-विक्रय करते हैं, जरूरी नहीं कि पूर्वज एक ही हो। 'Encylopedia Britanica' के पृष्ठ 228 पर यह बात मानी गई है कि भारत के व्यापार संबंध बहुत प्राचीन समय से ईसा की पहली कुछ शताब्दियों में दक्षिण पूर्व एशिया तथा रोमन साम्राज्य से काफी बड़े स्तर पर थे, इससे यह मान लेना कि आर्य लोग रोमन साम्राज्य के अथवा दक्षिणी एशिया के किसी भूभाग से आए थे, निराधार है।

(ग) यह धारणा कि वेदों में देवता ऐतिहासिक व्यक्ति थे, जिन्होंने राजाओं के रूप में अथवा आक्रांताओं के रूप मे भारत के मूल निवासी जिन्हें दस्यु समझा जाता था, काबू कर लिया यह भ्रान्त धारणा एवं विश्वास है 'Encylopedia Britanica' के पार्ट 18 के पृष्ठ 630 पर यह माना गया है कि वेद मन्त्रों में दिए गए वेदों के नाम अथवा व्यक्तियों के विशेषण उनके मानवीय होने का संकेत नहीं देते। ये नाम उनकी प्रकृति की शक्तियों के प्रतीक में ही दिए गए हैं। वे लोग ऐतिहासिक पुरुष न होकर दैवी शक्तियों के रूप में मन्त्रों में उल्लिखित हैं। स्पष्ट है कि दस्यु दानव युद्ध जो देवों के साथ वेदों में अथवा अन्य इतिहास में अंकित हैं, वे प्रकृति के निरंतर संघर्ष को ही अंकित करते हैं और समझना कि ये भारत के मूल निवासियों का दस्यु रूप में आर्य लोगों से संघर्ष था, एक बिल्कुल निराधार धारणा अथवा निष्कर्ष हैं।

(घ) आर्य लोगों के पास दास व्यवस्था नहीं थी। उन्होंने कभी कोई दास न बनाए, न पाले, न पकड़े और न ही किन्हीं

मानवों का दास रूप में व्यापार किया जबकि ऐसा प्रचलन समस्त विश्व में था एवं अरबी युनानी रोमानी तथा मंगोलियन इस प्रकार की व्यवस्था से बुरी तरह से ग्रस्त थे। आर्य लोग भारत में गाय पालते थे, वे गो-पालक थे और विश्व में कोई अन्य जाति गोपालक के नाते नहीं जानी जाती। आर्य लोग पशु चराने वाले, पशुधन के पालक और उस पर निर्वाह करने वाले नहीं थे, वे तो खेती बाड़ी में दक्ष थे। उस समय की सभ्यता में और कोई जाति खेती बाड़ी में इतनी कुशल नहीं थी। आर्य लोगों का मालकाना हक किसी बड़े जमींदार के पास नहीं रहा। सभी भूमि समाज की संपत्ति मानी जाती थी। उन्होंने किसी देश अथवा किन्हीं अन्य लोगों को न कभी गुलाम बनाया, न हमला किया। इतिहास साक्षी है कि आर्य लोगों ने भारत के बाहर कोई सेना नहीं भेजी और न आक्रमणकारियों का भारत से बाहर जाकर कभी प्रतिकार किया।

(ङ) आर्य लोगों में पर्दा प्रथा भी नहीं थी। विश्वभर के लोग आर्यों को छोड़कर अपने मृतकों को भूमि में दबाकर उनकी अंत्येष्टि करते थे, जबकि केवल मात्र आर्य लोग भारत में अपने मृतकों का अग्निदाह करते थे। अतः कैसे माना जाये कि ऐसे लोगों का इतिहास, विश्व के किसी अन्य समाज संस्कृति या क्षेत्र में मेल खाता था अथवा आर्य लोग उनमें से किसी एक का कभी भाग रहे थे।

(च) ईरानी व यहूदी लोग अपनी लिपि दाएँ से बाएँ लिखते थे। यह कहना कि आर्य लोग ईरान से कोई संबंध लेकर वहाँ के अग्नि पूजक पारसियों जोरोस्तियों से पैदा हुए थे, एक भ्रांति है। जोरोस्ति तो स्वयं इतिहास में आर्यों के बहुत बाद अस्तित्व में आए थे। मंगोल व मध्य एशिया के युद्ध करने वाले राजाओं या तारतराजी लोगों के उत्तराधिकारी थे, इस बात को नकारा जाता है। आर्य लोगों के गाँव अपने आप में प्रजातांत्रिक थे और वे गणतंत्र भी थे और उनमें कोई राजा व पारिवारिक मुखिया नहीं होते थे। इस प्रकार के गणतांत्रिक लोग सारे मध्य एशिया में नहीं पाए जाते थे। अतः कैसे माना जाए कि आर्य लोग मध्य एशिया की किसी संस्कृति से उत्पन्न हुए थे।

6. भारत के आर्य लोग समस्त विश्व को अपना कुटुम्ब मानकर उसके कल्याण की कामना तथा साधना करते थे। वे अहिंसा के अनुयायी थे। इस प्रकार की संस्कृति वाले गत 3000 वर्षों में कोई अन्य समाज या राष्ट्र इस भावना के अनुयायी नहीं रहे। अतः स्पस्ट है कि भारतीय आर्य लोग विदेशी सभ्यताओं से भिन्न थे और वे कहीं बाहर से आए हों, प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

7. आर्य लोगों का और उनके धर्म का कोई जनक अथवा पैगम्बर नहीं था, जैसा कि यहूदियों का अब्राहम, ईसाईयों का ईसामसीह, मुसलमानों का मुहम्मद और अन्य लोगों के धर्मावलम्बियों के प्रतिपादक अथवा जनक रहे हैं, यह दिखाता है कि किस प्रकार भारत के आर्य विश्व से पृथक थे।

8. आर्य सभ्यता, संस्कृति, धर्म व आस्था पद्धति में कोई काफिर या जेहादी अथवा पुण्य या पवित्र युद्ध धर्म के नाम पर कभी प्रतिपादित नहीं किया गया। आर्य लोग तो सारे संसार के लोगों को ईश्वरीय संतान मानकर अपने से भिन्न मतांतर रखने वालों को मानव या भ्राता के तौर पर देखते थे। उन्होंने अन्य को कभी शत्रु नहीं समझा और न उनके अन्य धर्मावलम्बियों होने पर समाज से द्रोह करने वाला कहा। ऐसे मानवतावादी लोगों को विश्व के अन्य भागों में ढूंढने से भी पाया नहीं जा सकता। ऐसे लोग किसी अन्य क्षेत्र में संस्कृति लेकर भारत आए हैं, ऐसा मानना अपने आप में एक विकृति है।

9. जिस समय आर्य लोग भारत में ईसा से 1500 वर्ष पूर्व एवं उसके पश्चात यहाँ रहे माने जाते हैं, उनकी महिलाएँ विदुषी थीं। हर ग्राम सभा में महिलाओं का सम्मिलित होना आवश्यक था। आर्य लोग अपनी स्त्रियों को इतना मान देते थे जबकि उस समय समस्त विश्व में स्त्रियों को कठिनाई से ही अन्य लोग सह पाते थे और उन्हें साधन या भाग्यवस्तु मानते थे। निश्चित है कि आर्य लोग उनसे भिन्न थे।

10. आर्य लोगों में राज्य सेना नहीं होती थी। यदि उन पर कभी युद्ध थोपा जाता था तो वे अपनी सेना अपने गणतंत्र में से भर्ती करके, अपना बचाव करते थे। अतः वे हमलावर नहीं हो सकते।

11. 'जन' शब्द ऋग्वेद में 275 स्थानों पर आया है, यह वह समय था जब 'जनतंत्र' का दुनिया को पता नहीं था और न उसको कोई मान्यता ही थी। अतः ऐसे लोग बाहर से आए थे, यह कैसे माना जाए?

12. प्रसिद्ध इतिहासकार 'मूर' ने अपने संस्कृत में रचित इतिहास भाग 2 में स्पष्ट माना है कि किसी संस्कृत की

पुस्तक में, चाहे वह कितनी भी प्राचीन हो, यह संकेत नहीं दिया गया कि आर्यों का उद्गम भारत से बाहर हुआ था और यह भी माना है कि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि ऋग्वेद में जिन दास अथवा असुरों का जिक्र किया गया है, वे लोग भारत के मूल निवासी थे।

13. यह भी माना जाता है कि श्री बालगंगाधर तिलक भी मानते थे कि आर्य लोग भारत में उत्तरी ध्रुव से आए थे। श्री तिलक ने श्री उमेश चन्द्र विद्यारत्न को स्पष्ट रूप से कहा था कि उन्होंने वेदों को मूलरूप में न पढ़कर एवं वेदों के पश्चिमी विद्वानों के अनुवाद को ही पढ़ा था, जिससे उनकी मूलभावना का अर्थ पूर्ण तथा मेरे पास पहुँच नहीं पाया। अतः तिलक ने विद्यारत्न को स्वीकार किया कि वे अपनी इस प्रस्तावना से कि आर्य लोगा उत्तरी ध्रुव से भारत में आए, प्रतिपादित नहीं कर सके।

14. आर्यों का ब्लड ग्रुप संसार के किसी और ब्लड ग्रुप से जो मध्य एशिया में व यूरोप में पाया जाता है, मेल नहीं खाता। इस विषय में Encylopedia Britania भाग 18 पृष्ठ 972, भाग 4 पृष्ठ 292, भाग । पृष्ठ 34 की ओर ध्यान देने की प्रमाण रूप से आवश्यकता है यह वैज्ञानिक सत्य है कि जो लोग एक ब्लड ग्रुप नहीं रखते, उनके पूर्वज एक हो ही नहीं सकते।

●

माणिकराव भोसले गौरव स्थिर निधि के लिए आवाहन

समाज तथा देश को खंडित करने वाली जातिप्रथा को तोड़कर विवाह करने की प्रेरणा देने के लिए लातूर (महाराष्ट्र) के श्री माणिकराव भोसले ने 1970 में अपने दो साथियों-श्री सांबाप्पा राऊत तथा स्व. रामस्वरूप लोखंडे- के साथ मिलकर आर्य समाज रेणापूर के अन्तर्गत 'अन्तर्जातीय विवाह मंडल रेणापूर' की स्थापना की। विगत 45 वर्षों में इस मंडल के माध्यम से इन्होंने 400 विवाह निश्चित किए हैं। मंडल के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में इन्होंने अनेकानेक आर्थिक कठिनाइयों को झेलते हुए अपना पूरा जीवन ही इस कार्य में लगा दिया है। आयु के 92वें वर्ष में भी वे अपना यह कार्य पूरी निष्ठा व लगन से कर रहे हैं। इसी कार्य को ध्यान में रखकर 2012 में दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में इनका अभिनन्दन पत्र देकर सत्कार किया गया।

मंडल के संस्थापक के साथ माणिकराव जी 'आय समाज रामनगर, लातूर' के भी संस्थापक हैं। इन्होंने इस समाज का कोषाध्यक्षपद 16 वर्ष संभाला है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग में ये वर्षों से सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं। ऐसे सेवाभावी, निष्ठावान, लगनशील, कर्मठ व परोपकारी आर्य सेवक के गौरवार्थ महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा उनके नाम से पाँच लाख की स्थिर निधि स्थापन कर रही है। श्री माणिकराव जी की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने से इस निधि का ब्याज उन्हें आजीवन मिलता रहेगा तथा उनके उपरान्त यह ब्याज वेद प्रचार के लिए सभा को मिलेगा, ऐसा निर्णय सभा ने किया है।

अतः आर्यजगत् के दानशूर महानुभावों से सानुरोध विनती है कि वे स्वयं तथा अपने समाज, संस्था की ओर से इस स्थिर निधि के लिए अधिकाधिक सहायता राशि देकर अपना धन सत्कार्य में लगाकर पुण्य के भागी बनें। धनराशि का चेक या ड्राफ्ट **''ज्येष्ठ आर्य सेवक गौरव समिति''** के नाम से बनवाकर वह **'मंत्री, आर्यसमाज रामनगर, औसा रोड, लातूर (महाराष्ट्र) -413 531'** के पते पर भेजकर रसीद प्राप्त करें। ड्राफ्ट **परली (जि. बीड-महाराष्ट्र)** के किसी भी बैंक की किसी भी शाखा का बनवा सकते हैं।

निवेदक -

सचिव, अन्तर्जातीय विवाह मंडल रेणापूर।

संपर्क कार्यालय -

सीताराम नगर, लातूर (महा.)

सती राजबालाएँ

- मुरारी लाल शर्मा

जिस देश में पैदा हुई हों वीर बालाएँ।
उस देश के वीरत्व की गाथा न क्यों गाएँ।। - लेखक

खलीफा वलीद के सेनापति मुहम्मद-बिन-कासिम ने सन् 718 ई. में भारत के सिन्धु देश पर आक्रमण किया। सिन्धु देश के वीर राजपूत राजा दाहिर ने शत्रु से घोर संग्राम किया, परन्तु अन्त में हार ही गया और यवन सेनापति के हाथों पड़कर दाहिर को केवल अपने गौरव की ही नहीं, वरन् अपने प्राणों तक की आहुति देनी पड़ी। मदान्ध विजयी मुहम्मद-बिन-कासिम लूट के धन-माल के साथ राजा की परम रूपवती कुमारियों को भी पकड़कर ले गया।

'आईने-अकबरी' और 'फरिश्ता' ग्रंथों के लेखकों का कथन है कि जिस समय दोनों सुन्दर रमणियाँ टर्की के दमिश्क नगर में पहुँचीं और खलीफा ने उनकी मनोहारी सुन्दरता का वर्णन सुना तो उसका चित्त पापवासना के मारे बेचैन हो उठा। खलीफा ने आज्ञा दी कि बड़ी राजकुमारी को हरम (विलास-भवन) में उपस्थित करो। निस्सहाया, निराश्रया तथा अनाथिनी राजपूत बालाओं को उस कामासक्त दुराचारी के विलास-भवन में ले जाया गया। भगवान् के अतिरिक्त उन निराश्रया की कौन रक्षा करता? उनके पवित्र कुल को कलंकित होने से कौन बचाता? द्रौपदी के सतीत्व की रक्षा करनेवाले उसी दयासिंधु, दीनपालक, अशरण-शरण भगवान् ने ही तब निराश्रिता राजपूत बालाओं की रक्षा की।

विलास-भवन में पहुँचकर जब राजनन्दिनियों ने अपने सतीत्व की रक्षा का अन्य कोई साधन न देखा तो बड़ी बहन बोली, "महाराज, हमारे शरीर को स्पर्श न कीजिए, ये आपके स्पर्श करने योग्य नहीं। दुष्ट कासिम पहले ही बलात् हम दोनों बहनों का धर्म भ्रष्ट कर चुका है।"

राजकुमारी के मुख से ये शब्द सुनते ही खलीफा की आँखें क्रोध के मारे लाल हो गईं। उसके शरीर से चिंगारियाँ निकलने लगीं। उसने तड़ककर कहा— "कासिम को जिंदा ही ताजा खाल में सीकर दरबार में उपस्थित करो!"

कासिम को शीघ्र ही दरबार में लाया गया और उस महापातकी का सबके सम्मुख वहीं प्राणान्त कर दिया गया। इस प्रकार कौशल से पवित्रचरित्रा राजपूत बाला ने उस कामी खलीफा से अपनी और छोटी बहन के सतीत्व की रक्षा की और किसी पर उसका रहस्य भी न खुला।

जिनके मन के भाव शुद्ध होते हैं परमात्मा उनके आदर्शों की अवश्य रक्षा करता है।

(साभार : गोदी भरे लाल)

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell
परदे ही परदे गददे ही गददे
J.K. Singhal
Piyush Singhal
Singhal Furnishing
(Auth. Sleepwell and Coirrlene Gallery)
Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.
Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004
Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, Piyush Singhal-9953215463

नर्तकी बनी वीरांगना

- रविचन्द्र गुप्ता

कानपुर से केवल 12 मील की दूरी पर नाना साहब की छोटी सी रियासत, बिठूर। सन् 1857, भारत के स्वतंत्रता संग्राम का ऐतिहासिक वर्ष। मार्च के बाद जैसो-जैसे मौसम में गर्माहट आती जा रही थी वैसे ही बिठूर में अफवाहें तेजी से फैल रही थीं। कोई कहता—"पर्सियन और रूस की सेना फिरंगियों को भगाने के लिये भारत में प्रवेश करने वाली है।" तो दूसरा व्यक्ति इसका प्रतिवाद करता—'नहीं नहीं! तुमने सुना नहीं, कल ही तो समाचार आया है। दिल्ली से अंग्रेज़ों को खदेड़ दिया गया है। विद्रोही सेना ने बहादुरशाह को अपना बादशाह घोषित कर दिया है।" एक अन्य व्यक्ति इसी बात का समर्थन करता-"गाँव-गाँव में चपाती बाँटी जा रही है। अब तो क्रांति निश्चित है। कभी भी कुछ भी हो सकता है। सब सावधान रहो।" तभी एक व्यक्ति बड़े रहस्यमयी वाणी में बोल पड़ा—"हाँ! हाँ! मेरी बुआ भी बता रही थी कि उनके यहाँ एक बंदर का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर आया था। तमाशा दिखाते-दिखाते वह बोला, 'गर्मी बहुत पड़ रही है। अब तमाशा खत्म होने वाला है। 31 मई को आखिरी तमाशा होगा क्योंकि 'लाल बंदर' को जून की गर्मी सहन नहीं होगी। अतः 31 मई को भूलना मत। सब तैयार रहना।"

इस प्रकार खेल-तमाशों व अन्य माध्यमों से 31 मई को होने वाली समग्र-क्रांति का गुप्त संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाया जा रहा था। जनमानस में अंग्रेज़ों के विरुद्ध क्षोभ की जो अग्नि भीतर ही भीतर सुलग रही थी वह ज्वालाओं के रूप में उबल पड़ने को आतुर हो उठी। घरों और बाज़ारों में, सड़कों और चौराहों पर एक ही स्वर सुनाई पड़ता था। "संघर्ष की बेला आ पहुँची है। अब तैयार हो जाओ।" इस वातावरण से कानपुर की बदनाम गलियाँ भी अछूती न रहीं। आगामी क्रांति की सुगबुगाहट जैसे ही कानपुर की बदनाम गलियों में पहुँची तो अजीजन के अन्दर छिपी देशभक्ति और वीरांगना का भाव जाग उठा। अजीजन ने निश्चय कर लिया—"इस परीक्षा की घड़ी में वह देश के लिये कुछ न कुछ अवश्य करेगी। इसके लिये उसे अपना जीवन भी बलिदान करना पड़े तो इसे वह अपना सौभाग्य समझेगी।"

सन् 1832 में लखनऊ में जन्मी अजीजन के जन्म के समय ही उसकी माँ चल बसी थी। वयस्क होने पर वह कानपुर में आ गयी और उमराव जान अदा के साथ रहने लगी। उसी ने अजीजन को इस पेशे में डाल दिया। अजीजन बहुत खूबसूरत थी। नाना साहब के महलों में उसके नृत्य से बड़े-बड़े रईस लोग व अंग्रेज भी अपनी सुध-बुध खो बैठते थे। ऐसे ही रईसों में एक थे नाना साहब के विश्वस्त साथी शमशुद्दीन खाँ। वह इस नर्तकी को अपना दिल दे बैठे थे। अज़ीजन भी उनसे बेहद प्रेम करती थी। अजीजन ने अपने मन के संकल्प को अगले ही दिन शमशुद्दीन खाँ के सामने रखा, "नवाब साहब! मैं पेशे से एक नर्तकी हूँ। लेकिन आज देश की आज़ादी की लड़ाई में आपके कुछ काम आना चाहती हूँ। तन, मन और धन सभी कुछ देश के लिये अर्पित करने की शपथ लेकर आयी हूँ। शायद इसी से मेरे इस जन्म के पाप धुल जायँ।"

"अरे वाह! क्या खूब! यह तो तुमने मेरे मन की बात ही छीन ली। खुदा की कसम, मैं भी अक्सर यह सोचा करता था कि काश! यह खूबसूरती हमारे मुल्क के कुछ काम आ सकती....। आज अंग्रेज छावनियों में हिन्दुस्तानी सिपाहियों को संदेश भेजने के लिये जासूसों की बड़ी जरूरत है। तुम यह काम बखूबी निभा सकती हो। मैं आज ही नाना साहिब से बात करके तुम्हारी ट्रेनिंग की व्यवस्था कराता हूँ।"

"नवाब साहब! केवल जासूसी ही नहीं, मैं मोर्चे पर भी शत्रु से लोहा लेना चाहूँगी, और केवल मैं ही नहीं मेरे साथ पूरी महिला मंडली होगी। सभी को कल ही से ट्रेनिंग का इंतजाम कर दीजियेगा।"

नवाब साहब प्रसन्न मुद्रा में बोले, "यह तो सोने में सुहागा जैसी बात है। मैं अभी जाकर सारे इंतजामात कराये देता हूँ।"

अजीजन का रोम-रोम खिल उठा। उसकी आँखों में खुशी के अश्रु झलक आये। सजल नेत्रों से वह बोली, "नवाब साहब! मैं ता-ज़िंदगी आपके अहसानों का बदला तो शायद न चुका सकूँ, लेकिन एक अहद करती हूँ कि आपके अलावा दूसरे मरद का ख्याल भी यदि मन में लाऊँ तो मैं जिंदा ही जमीन में समा जाऊँ। और दूसरा अहद यह करती हूँ कि आज के बाद केवल देश की खातिर ही नाचूँगी, देश की खातिर ही जीऊँगी और जरूरत पड़ी तो देश की खातिर ही अपनी जान भी न्यौछावर कर दूँगी। यदि मैं यह अहद तोडँ तो.... ।"

नवाब साहब ने अजीजन का वाक्य पूरा होने से पूर्व ही उसके मुँह पर उँगलियाँ रख उसे अपने कलेजे से लगा कर बाहों में भर लिया। दोनों के सजल नेत्रों ने उन्हें प्यार की असीम गहराइयों में पहुँचा दिया। शमशुद्दीन खाँ ने उसी दिन महिलाओं के युद्ध-प्रशिक्षण की व्यवस्था करा दी। अगले ही दिन से अजीजन ने अपने साथ की कुछ अन्य नर्तकियों के साथ युद्ध-अभ्यास आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे महिलाओं की संख्या बढ़ती गई। अजीजन ने इस महिला सेना का नाम "मस्तानी टोली" रख दिया। मस्तानी टोली ने दिन रात परिश्रम करके एक सप्ताह में ही जासूसी करना, तलवार चलाना, घोड़े की सवारी व बंदूक चलाने का काम-चलाऊँ प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया। अजीजन को महिलाएँ 'अज्जी बी' नाम से पुकारती थीं। अज्जी बी दिन में प्रशिक्षण कार्य से निबटते ही घोड़े पर सवार होकर नगर में निकल जातीं। मुहल्लों में महिलाओं को जाग्रत कर उन्हें भी मस्तानी टोली में शामिल होने के लिए प्रेरित करतीं। अतः धीरे-धीरे महिलाओं की संख्या बढ़ती गई। अजीजन ने घूम-घूम कर अंग्रेजों के उन ठिकानों का भी पता लगा लिया जहाँ क्रांति होते ही कार्यवाही करनी थी। अपनी मस्तानी टोली को उसने प्राथमिक चिकित्सा से लेकर युद्ध क्षेत्र में लड़ने तक के सारे क्रिया-कलापों से अवगत करा दिया। मस्तानीटोली की कुछ साहसी महिलाओं को अपने साथ सीधा युद्ध मोर्चे पर लड़ने हेतु तैयार कर लिया। कुछ को सैनिकों को रसद व भोजन की व्यवस्था तथा कुछ को प्राथमिक चिकित्सा का कार्य सौंपा।

दिनांक 2 जून, 1857, प्रातःकाल का समय था। अजीजन की दासी बाहर से घबराई हुई सी दौड़ी आई और बोली, "अज्जी बी! अज्जी बी! नवाब साहब तशरीफ ला रहे हैं।"

"चल मुई क्या बकती है? नवाब साहब और इस वक्त? झूठी कहीं की!"

"अल्ला कसम मैं झूठ..... ।"

दासी का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि नवाब शमशुद्दीन खाँ तेज चाल से अजीजन के यहाँ आ धमके। अजीजन सकपकाती हुई अदाब बजाते हुए बोली, "नवाब साहब! आज अचानक, इस वक्त.... ?"

"हाँ बेगम साहिबा, तुमसे कुछ जरूरी गुफ्तगु करनी थी। कहिये आपकी ट्रेनिंग कैसी चल रही है?"

"मैं भी आपको यह बताना चाहती थी। अब हम मोर्चे पर जाने के लिये पूरी तरह तैयार हैं।"

"शाबास! आपने तो केवल बीस दिन में ही वह कुछ कर दिखाया जो..... ।" अजीजन ने बीच में ही बात काट दी। "बस कीजियेगा! यह तो सब आपका कमाल है। यदि आप मेरे अन्दर छिपे जज़्बातों की कद्र नहीं करते तो मैं यह सब कहाँ कर पाती। आगे के लिये बताइये हमें क्या करना है?"

"हाँ! इसीलिये तो मुझे आज बेवक्त ही आना पड़ा। एक अहम सूचना है। कल रात को ही यह फैसला हुआ है कि दो दिन बाद यानि कि 4 जून को संघर्ष आरम्भ हो जायेगा। पहले अर्द्धरात्रि में तोपों के तीन गोले छूटेंगे। यही संकेत होगा संघर्ष के शुरु होने का। एक बड़ी जिम्मेदारी का काम आपको करना है। आपको आज ही दुश्मन की छावनी में जाकर मुजरे के बहाने हिन्दुस्तानी सैनिकों को यह इत्तला देनी है। छावनी में तुम्हारे मुजरे का प्रबंध कर दिया गया है। वहाँ जाने की भी व्यवस्था करा दी है।"

मेरठ से सैनिक क्रांति के विस्फोट एवं दिल्ली पर क्रांतिवीरों के अधिकार की सूचना नाना साहब को 14

मई को ही प्राप्त हो गयी थी। लेकिन अंग्रेज अधिकारियों को यह सूचना 18 मई को प्राप्त हुई। तभी से कानपुर के सैनिक अधिकारी घबराये हुए थे। फिर भी नाना साहब पर उनको इतना विश्वास था कि कानपुर के कोषागार पर 22 मई से नाना साहब के सुरक्षा सैनिकों का पहरा बैठा दिया गया। अंग्रेज़ अधिकारी अपने बीबी-बच्चों को सुरक्षित स्थानों पर भेजने की व्यवस्था करने लगे। नाना साहब ने कानपुर छावनी के भारतीय सिपाहियों को क्रांति की पूर्व निर्धारित तिथि 31 मई को आगे बढ़ाने की सूचना गुप्तचरों के माध्यम से पहुँचा दी थी। अब वह आगे की तिथि की इंतज़ार में थे। अंग्रेज़ अधिकारियों में फैली अफरा-तफरी से भारतीय सिपाहियों को आभास हो रहा था कि कुछ घटित होने वाला है। लेकिन क्या होने वाला है और कब होने वाला है, उन्हें कुछ पता नहीं था।

ऐसी ही शंकाओं के वातावरण में छावनी में अजीजन के नाच-गाने का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि में आयोजित इस कार्यक्रम में अजीजन ने सांकेतिक भाषा में भारतीय सैनिकों को 4 जून को क्रांति होने का संदेश दे दिया। तदनुसार दिनांक 4 जून, 1857 को अर्द्धरात्रि में तोपों की गड़गड़ाहट ने समस्त कानपुर को दहला दिया। इसी आवाज के साथ छावनी में क्रांति का विस्फोट हो गया। नाना साहब के नेतृत्व में भारतीय सैनिकों ने अंग्रेज़ों का सफाया करना आरम्भ कर दिया। तॉंत्या टोपे जैसे कुशल सैनिक अधिकारियों का सामना करते हुए अंग्रेज़ अधिकारियों को अपना अन्त नज़र आने लगा।

अजीजन मर्दाने वेश में घोड़ी पर सवार होकर अपनी मस्तानी टोली के साथ निकल पड़ी। बिजली की तरह पूर्व चिन्हित ठिकानों को ध्वस्त करने लगी। उसने अनेक अंग्रेज़ों को यमलोक पहुँचा अपनी चिर-पिपाशा को खूब शांत किया। दिनांक 10 जून तक कानपुर में अंग्रेज़ी दासता के सभी प्रतीकों को नष्ट कर दिया गया। नाना साहब ने अपना राजदरबार आयोजित किया। इस दरबार में अजीजन भी मर्दाने सैनिक वेश में उपस्थित थी।

कानपुर पर नाना साहब का अधिकार तो हो गया लेकिन अंग्रेज़ अभी भी शांत नहीं बैठे थे। कई दिन तक लगातार संघर्ष चलता रहा। दिनांक 16 जुलाई को जनरल हैवलाक भारी संख्या में सेना सहित इलाहाबाद से कानपुर आ धमका। पुनः घमासान युद्ध प्रारम्भ हो गया। इस बार अजीजन युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर शत्रु से लोहा ले रही थी। उसका तेजस्वी स्वरूप देखते ही बनता था। हाथ में नंगी तलवार लिये शत्रु-सेना को चीरती हुई चली जाती थी। कभी घायल सिपाहियों के लिये दूध व दवाइयाँ बाँटने का कार्य करती तो कभी सैनिकों के हौसले बढ़ाती। अजीजन की मस्तानी मंडली किले के नीचे लड़ने वाले सैनिकों को रसद व हथियार पहुँचाने का कार्य कर रही थी। ब्रिटिश सेना में एक अंग्रेज सेनाधिकारी कर्नल विलियम ने कानपुर के एक व्यापारी जानकी प्रसाद से पूछा था, "वैल मिस्टर जानकी प्रसाद! हमरी सेना के जवानों में सुंदर युवती के साहस की बड़ी चर्चा है। नाना साहब की सेना में वह बड़ी दिलेरी से लड़ रही है। वह कौन है? क्या आप उसके बारे में कुछ बताएँगे?

व्यापारी जानकी प्रसाद ने बताया, "जिस समय कानपुर में स्वतंत्रता का प्रतीक हरा झंडा फहराया जा रहा था, वह पुरुष वेश में घोड़े पर वहाँ उपस्थित थी। वह तमगों और गोलियों से सुसज्जित थी।"

नानक चन्द ने भी अजीजन के विषय में अपनी दैनिक डायरी में लिखा है, "सशस्त्र अजीजन स्थान-स्थान पर निरंतर विद्युत-लता सी दमक रही थी। वह अनेक बार तो थके हुए सैनिकों को मार्ग में ही मेवा, मिष्ठान और दूध देती दृष्टिगोचर होती थी।"

युद्ध में अंग्रेज़ सेना को निरंतर पीछे हटना पड़ रहा था। लेकिन शीघ्र ही बाहर से भारी मात्रा में फौज आ जाने से क्रांतिकारी सेना को पीछे हटना पड़ा। नाना साहब को कानपुर छोड़ना पड़ा। वह भूमिगत हो गये। उनके अनेक सैनिक मारे गए। कुछ पकड़े गए। अजीजन भी गिरफ्तार कर ली गयी।

जो सुंदर युवती बहादुरी के कारण अंग्रेज़ सेना में चर्चा का विषय बनी हुई थी आज वह सेनापति हैवलाक के सम्मुख बन्दी अवस्था में खड़ी थी। हैवलाक अजीजन को देखकर स्वयं हैरान था कि मर्दाने वेश में

छिपी उस सुंदर युवती के चेहरे पर भय की जगह अजीब सी मुस्कान थी। हैवलाक को उस पर दया आ गई। अतः उसने अजीजन को भारी इनाम और रुतबे का लालच देकर अपनी सेना में काम करने को कहा। और न मानने पर गोली से 'शूट' करने की धमकी दी।

अजीजन ने जब यह सुना तो वह क्रोध से तमतमा उठी। उसकी त्यौरियाँ चढ़ गईं। वह बोली, "इनाम का लालच और गोलियों का भय दिखा कर आप मुझे मुल्क से गद्दारी का सबक सिखा रहे हैं। इनाम और अपनी जान के लालच में अजीजन कभी भी मुल्क का सौदा नहीं कर सकती। मुल्क के मुकाबले में मेरी जान की कोई कीमत नहीं। लीजिये मारिये गोली...."

यह कहते हुए अजीजन ने अपना सीना संगीनों के आगे कर दिया और तन कर खड़ी हो गयी। तभी हैवलाक ने संकेत दिया और दनादन गोलियों की बौछार ने उसका शरीर छलनी कर दिया। इस प्रकार कानपुर की बदनाम गलियों के संगीत की स्वर लहरी और घुँघरूओं की झनकार ने जब 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कूद कर वीरांगना का बाना पहना तो वह स्वरूप समस्त भारतीयों के लिये वन्दनीय बन गया। वीर सावरकर ने "1857 का भारतीय स्वातंत्रय समर" में अजीजन के विषय में लिखा है, "कानपुर की अनेक रमणियाँ पर्दों को त्याग कर रण-स्थल में कूद पड़ी थीं। किन्तु वे सब शूर युवक और युवतियाँ भी जिसकी महान निष्ठा और उत्साह के आगे नतमस्तक हो जाते थे, वह थी रूप और लावण्य की साक्षात् और सजीव प्रतिमा, नर्तकी अजीजन.... उसने वीरों के परिधान धारण कर लिये थे। कोमल गुलाब से कपोलों वाली और प्रतिक्षण मन्द मुस्कान विस्फारित करती रहने वाली वह रूपसी सशस्त्र हो अश्व की पीठ पर आरूढ़ होकर घूम रही थी। और तोपखाने के संचालक सिपाही उसकी रूप सुधा का पान करते ही अपनी थकान भूल जाते थे।"

(साभार : बलि पथ की वीरांगनाएँ)

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

मानव कल्याण के नियम

- होती लाल आर्य

आर्य वीर दल, आर्य समाज का युवा संगठन है। आर्य वीर दल महर्षि दयानन्द द्वारा सन् 1875 में स्थापित आर्य समाज के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु युवा वर्ग में कार्य कर के युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का कार्य कर रहा है। आर्य समाज क्या है? इसकी स्थापना की आवश्यकता क्यों पड़ी इस बारे हमारे आर्य वीरों को जानकारी होनी चाहिए। इस लिए आर्य समाज की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का विवरण संक्षिप्त रूप से इस लेख के माध्यम से प्रस्तुत है ताकि हमारे आर्य वीरों को आर्य समाज के बारे में ठीक-ठीक ज्ञान हो सके।

19वीं शताब्दी के मानवतावादी महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती वेद विद्या के अनुपम जानकार थे। विश्व कल्याण की भावना से उन्होंने सन् 1875 में बम्बई महानगर में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने समाज सुधार के सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी कार्य किया है। सभी प्रकार की सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आर्य समाज ने बहुत बड़े स्तर पर काम किया है। छुआछूत के भेदभाव को मिटाने, स्त्री शिक्षा, दलितों को समाजिक व धार्मिक अधिकार दिलाने के लिए आर्य समाज ने बहुत बड़ा कार्य किया है। समाज में व्याप्त कुप्रथाओं को दूर करने, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने, सत्य को स्वीकार करने, धार्मिक अन्ध विश्वासों व सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आज भी आर्य समाज प्रबल आवाज उठाता रहा है। आर्य समाज अपनी जिन मूलभूत मान्यताओं व शिक्षाओं को ले कर समाज सुधार का कार्य कर रहा है वे निम्न प्रकार है :-

ईश्वर :-

1. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनादि, अनन्त, निर्विकार, सर्वव्यापक, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करना योग्य है।

2. ईश्वर कभी भी शरीर धारण कर अवतार नहीं लेता। इसलिए उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान पर मूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करना, उन्हें खिलाना-पिलाना, झूला-झुलाना, पंखे-झलना, धूप-दीप दिखाना अन्धविश्वास एवं अवैज्ञानिक है।

3. ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों तत्व अनादि हैं।

वेद :-

4. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ईश्वर का दिया हुआ ज्ञान है।

5. संसार के सभी स्त्री-पुरुषों को समान रूप से वेद पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार है। पौराणिक ग्रन्थों एवं परम्परा में स्त्री और शूद्र को वेद पढ़ने से वंचित करना हमारे सामाजिक पतन का मूल कारण है।

6. वेद मन्त्रों में पशु हिंसा, श्राद्ध और अश्लीलता परक व्याख्यान करना पौराणिकों का केवल दुराग्रह है, इसमें कोईसच्चाई नहीं है।

पंच महायज्ञ :-

7. प्रत्येक गृहस्थ को यथासम्भव प्रतिदिन निम्न पांच यज्ञ, उत्तम कार्य करने चाहिए :-

ब्रह्मयज्ञ-निराकार ईश्वर के गुणों का ध्यान करते हुए वेद शास्त्र आदि का स्वाध्याय व संध्योपासना करना।

देवयज्ञ—वातावरण की शुद्धि के लिए एवं जीव कल्याण के लिए शुद्ध घी एवं हवन सामग्री से अग्नि कुण्ड में यज्ञ करना तथा अच्छी संगति व दान करना।

पितृयज्ञ—माता-पिता, आचार्यों की श्रद्धापूर्वक सेवा-सत्कार करना पितृयज्ञ है। जो प्रत्येक को करके माता-पिता एवं गुरुजनों के ऋणी से उऋण होने का

प्रयत्न करना चाहिए।

अतिथि यज्ञ—सदाचारी, परोपकारी, धर्मात्मा विद्वानों की सेवा व सहयोग के साथ उनसे सत्योपदेश प्राप्त करना।

बलिवैश्वदेव यज्ञ—पशु-पक्षियों, कीट पतंगों के लिए अन्न-पानी का प्रबंध करना।

गुरु और गुरुडम :-

8. जीवन को संस्कारित करने में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः गुरु के प्रति श्रद्धाभाव रखना उचित है लेकिन गुरु को अलौकिक दिव्य शक्ति से युक्त मान कर उससे नामदान लेना उसे भगवान या उसका विशेष दूत मानकर उसकी या उसके चित्र की पूजा करना, उसके दर्शन या गुरुनाम की कीर्तन करने मात्र से सब दुःखों और पापों से मुक्ति मानना आदि गुरुडम है। अतः इसका परित्याग करना चाहिए।

श्राद्ध :-

9. ईश्वरोपासना, स्वाध्याय एवं सदाचरण करते हुए जीवित माता-पिता, गुरुओं और वृद्धों की सेवा व सम्मान करना ही श्राद्ध है। मरे हुए लोगों के नाम ब्राह्मणों को भोजन कराना, दान-दक्षिणा देना तथा विशेष स्थान पर जाकर पिण्डदान, गोदान आदि करने से पण्डित जी को तो दक्षिणा आदि मिल सकती है, मृतकों की आत्माओं को कुछ नहीं मिलने वाला।

मृतक कर्म

10. मनुष्य की मृत्यु के बाद मृत-शरीर का दाहकर्म करने के पश्चात अन्य कोई कार्य नहीं रह जाता। आत्मा की शान्ति या उद्धार के लिए करवाया जाने वाला गरुडपुराण आदि का पाठ या मन्त्रजाप इत्यादि धर्म की आड ले कर अधार्मिक लोगों द्वारा किया जाने वाला पाखण्ड है।

पूजा का अर्थ

11. जड़ पदार्थों का उचित रखरखाव व सदुपयोग ही उनकी पूजा है। तुलसी के वृक्ष ज्वर इत्यादि रोगों में लाभदायक होते हैं और पीपल, बड आदि के वृक्ष आक्सीजन अन्य वृक्षों की अपेक्षा अधिक मात्रा में छोड़ते हैं, जो जीव कल्याण एवं वातावरण को प्रदूषित होने से बचाते हैं, इसलिए इन की रक्षा करनी चाहिए न की इनकी पूजा, परिक्रमा करके अथवा धागा बांध कर करनी चाहिए। यह पाखण्ड है। ईश्वर के गुणों का वर्णन करके सन्ध्या आदि करना ही पूजा है।

कर्म फल

12. हर व्यक्ति को अपने किए शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। किसी भी प्रकार का कर्मकाण्ड पापकर्मों के फल से नहीं बचा सकता। अतः पाप कर्मों से बचाने के लिए करवाए जाने वाले सभी कर्मकाण्ड, अज्ञान, पाखण्ड एवं ठगी के साधन हैं।

भक्ति

13. एकान्त में बैठकर भगवत चिन्तन करते हुए उसकी दयालुता, न्यायकारिता आदि गुणों को जीवन में धारण कर पवित्र जीवन जीने का नाम ही भक्ति है। लाखों के पाण्डाल लगा कर फिल्मी धुनों पर स्त्री-पुरुषों को नचाना, झूम-झूम कर गाना, तालियाँ बजाकर कीर्तन करवाना भक्ति के नाम पर घटिया मनोरंजन है।

जाति नहीं वर्ण व्यवस्था

14. आर्य समाज वर्णव्यवस्था का समर्थक है। वर्ण व्यवस्था का आधार गुण कर्म स्वभाव है जबकि जाति प्रथा जन्म जात है। जो पढ़ाने से भी नहीं पढ़े वह शूद्र। शिक्षित व संस्कारित हो कर श्रेष्ठ कर्म करने वाला ब्राह्मण कहलाता है। कर्म ही व्यक्ति को श्रेष्ठ और पतित बनाते हैं। वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार किसी भी कुल में जन्मा बालक शिक्षा व योग्यता के आधार पर ब्राह्मण आदि बन सकता है। विद्या और सदाचार से हीन ब्राह्मण का पुत्र भी शूद्र माना जाता है।

शुभ-मुहूर्त

15. जिस समय चित्त प्रश्न्न हो, मौसम अनुकूल हो, परिवार में सुख शांति हो वही शुभ मुहूर्त है। गृह-नक्षत्रों की दशा देख कर पण्डितों से विवाह, व्यवसाय आदि का मुहूर्त निकलवाना शिक्षित समाज का लक्षण नहीं है। पाखंड मात्र है। ●

महिमा आर्य समाज की

- रामनिवास 'गुणग्राहक'

आज बताता हूँ मैं तुमको महिमा आर्य समाज की।
पावन पुण्य-पताका है दयानन्द ऋषिराज की।।

इस्लामी, अंग्रेजी झंझावातों से जब भारत जूझ रहा।
ले ईश्वर का नाम मूर्खता वश पत्थर को पूज रहा।।
कैसे रहूँ किधर को जाऊँ, नहीं किसी को सूझ रहा।
पढ़ा लिखा जाकर अनपढ़ से निज भविष्य को बूझ रहा।।

- हुई अपार दया ऐसे में स्वामीजी महाराज की.... पावन....
गहन विचार किया ऋषिवर ने इस अनर्थ की भूल कहाँ?
विश्व-गुरु भारत कर बैठा महाभयंकर भूल कहाँ??
भूमण्डल सम्राट बन गया गैरों की पग धूल यहाँ।
सत्य धर्म और सदाचार की परिभाषा प्रतिकूल यहाँ।।
-घोर अविद्या पराधीनता बात कोढ़ में खाज की... पावन....

देखा ऋषि ने वेद हीनता दुर्गतियों का कारण है।
शिक्षित और सुधारक जन भी शासक का ही चारण है।।
भारत के इन अध रोगों का करना मुझे निवारण है।
तपः साधना द्वारा करके दिव्य तेज को धारण है।।
-ऋषिवर ने धज्जियाँ उड़ा दीं हर एक बुरे रिवाज की.... पावन...

सर्व जयी योद्धा बनकर सब जीवन भर संग्राम किया।
चिन्तन-धारा में परिवर्तन लाने वाला काम किया।।
प्रबल प्रवाह पतन पथ पर था पुरुषार्थ से थाम लिया
वैचारिक संक्रान्ति ने ही स्वतन्त्रता परिणाम दिया।।
- ऋषिवर से ही हमें मिली थी परिकल्पना स्वराज की.... पावन....

जग के पूर्ण उपकार हेतु, प्यारे ऋषि का आह्वान है ये।
दयानन्द के दिव्य ध्येय की पूर्ति का अभियान है ये।।
श्रद्धा-तर्क समन्वय वाला वेद धर्म-विज्ञान है ये।
सत्य कहें तो मानवता को ईश्वर का वरदान है ये।।
-रक्षक है "गुणग्राहक" ये तो इस भारत के लाज की.... पावन....

(साभार : जानें आर्य समाज को से)

आर्य वीर दल पानीपत के बढ़ते कदम

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पानीपत द्वारा लगाए गए शिविरों का विस्तृत विवरण।

शाखा आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी टी रोड पानीपत के तत्वावधान में आयोजित सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रशिक्षण शिविर पानीपत मण्डल के प्रत्येक गांव व स्कूलों में लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों में आर्य वीर दल के अनुसार सर्वांग सुंदर व्यायाम,सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, चंद्र नमस्कार, नियुद्धम (जूडो-कराटे), आसन, प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्य वीर दल पानीपत के सुयोग्य प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया जा रहा है। यह सारा कार्यक्रम आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल जी.टी. रोड पानीपत के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी के मार्गदर्शन में चल रहा है, जिसकी शुरुआत पानीपत मण्डल के राजा खेड़ी गाँव में स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में दिनांक 05 अक्टूबर से 09 अक्टूबर तक किया गया। पहले ही शिविर में इस विद्यालय के लगभग 500 लड़के व लड़कियों ने इस शिविर में बढ़-चढ़कर भाग लिया और सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार आसन आदि का प्रशिक्षण शिक्षक महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। अंतिम दिन 9 अक्टूबर 2015 को विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने यज्ञ की महिमा का वर्णन किया और युवाओं को नशे से दूर रहने का संकल्प दिलाया। इस अवसर पर प्रधानाचार्या श्रीमति सुमित्रा देवी ने सभी का धन्यवाद किया। पी.टी. आई. श्री कंवलजीत, डी.पी. श्री जगदीश चहल व सभी अध्यापक, अध्यापिकाएं मौजूद रही।

आगे बढ़ते हुए अगला शिविर मडलौडा खण्ड के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अदियाना गांव में 12 से 17 अक्टूबर तक लगाया गया जिसमें विद्यालय के लगभग 150 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूडो-कराटे आदि का प्रशिक्षण आर्य वीर दल पानीपत के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य ने दिया। जिससे बच्चों में नई ऊर्जा आई। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय जी ने राजा भोज के जीवन पर प्रकाश डाला। आर्य वीर दल हरियाणा के प्रांतीय बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को महापुरुषों के बारे में विस्तार से वर्णन किया। राजकीय स्कूल के प्रधानाचार्य श्री अशिवनी कुमार जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। इस अवसर पर स्कूल के सभी अध्यापक व अध्यापिकाएं मौजूद रही। अगला शिविर गांव कुराड़ में स्थित टैगोर पब्लिक स्कूल में लगाया गया जिसमें स्कूल के 200 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, चंद्र नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूडो-कराटे का प्रशिक्षण मुख्य शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। अंतिम दिन समापन समारोह के अवसर पर पधारे वैदिक प्रवक्ता आचार्य अभय जीने विद्यार्थियों को चाणक्य के जीवन के बारे में बताया। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने देशभक्तों जैसे शहीद भगत सिंह, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्रशेखर आजाद आदि का वर्णन किया। टैगोर स्कूल के प्रधानाचार्य श्री जगदीश शास्त्री जी ने बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इसी शृंखला के तहत अगला शिविर पानीपत में स्थित राज नगर के गीता पब्लिक स्कूल में लगाया गया। यह शिविर 24 अक्टूबर से 27 अक्टूबर 2015 तक लगाया गया। इस शिविर में स्कूल के लगभग 150 विद्यार्थियों को आर्य वीर दल का प्रशिक्षण व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। जिसमें स्कूल के विद्यार्थियों ने बड़ी लगन व मेहनत से प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने विद्यार्थियों को पढ़ाई के दौरान कड़ा परिश्रम करने की प्रेरणा दी। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने विद्यार्थियों को स्वामी श्रद्धानंद, पं. लेखराम आदि के विषय में बताया। वहीं गीता पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सुभाष आर्य ने बताया कि इसी स्कूल में पिछले आठ वर्षों से आर्य वीर दल की शाखा का संचालन व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा किया जा रहा है।

अगला शिविर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बबैल में दिनांक 02 नवम्बर से 05 नवम्बर तक लगाया गया। जिसमें विद्यालय के 250 छात्र-छात्राओं को सर्वांग

सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम का प्रशिक्षण शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने बड़े ही उत्साह व लगन से प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने महर्षि दयानंद के जीवन पर प्रकाश डाला वहीं पर प्रांतीय बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने शहीद अश्फाक उल्ला खां, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन के बारे में बताया गया वहीं राजकीय वरिष्ठ मा. विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री जोगेंद्र जी ने सभी का धन्यवाद किया। अगला शिविर बबैल गांव में ही स्थित पी.के. वरिष्ठ मा. विद्यालय में लगाया गया। जिसमें विद्यालय के 100 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम का प्रशिक्षण व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य ने दिया। यह शिविर 06 से 17 नवम्बर तक लगाया गया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने बच्चों को अपने से बड़ों का आदर करने का और उनकी आज्ञा का पालन करने की प्रेरणा दी। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को महर्षि दयानंद के ब्रह्मचर्य जीवन के बारे में बताया। वहीं स्कूल के प्रधानाचार्य श्री राजेश जी ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

अगला शिविर पूजा मॉडर्न सी.सै. स्कूल, हरि सिंह कालोनी नूखाला में लगाया गया जिसमें स्कूल के लगभग 180 विद्यार्थियों को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम का प्रशिक्षण प्रधान शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। यह शिविर 8 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2015 तक लगा। अंतिम दिन समापन समारोह के अवसर पर आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने विद्यार्थियों को आर्य समाज के बारे में बताया तथा बीच-बीच में विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न किए जिनके विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिए। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को माता-पिता तथा गुरु के बारे में बताया। इस अवसर पर स्कूल की प्रधानाचार्या ने सभी का धन्यवाद किया। आगे बढ़ते हुए अगला शिविर इसराना में स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में दिनांक 14 से 16 दिसंबर तक लगाया गया। इस शिविर में विद्यालय के लगभग 200 छात्रों को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार,

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामया:

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

- चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

भूमि नमस्कार, नियुद्धम का प्रतिशक्षण पानीपत के प्रधान शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। अंतिम दिन समापन समारोह में आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के निदेशक आचार्य अभय जी ने बताया कि विद्यार्थी जीवन में तीन मूल बातों को ध्यान रखना चाहिए — आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य। वहीं सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरियाणा के बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने विद्यार्थियों को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जीवन पर प्रकाश डाला। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री संजय हुड्डा ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर डी.पी. जगदीश चहल, श्री गुलाब जी व सभी अध्यापक मौजूद रहे।

आगे बढ़ते हुए अगला शिविर दिनांक 17 से 21 दिसंबर तक पाँच दिवसीय शिविर ज्ञान विद्या पब्लिक स्कूल में लगाया गया जिसमें स्कूल के लगभग 150 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, नियुद्धम, आसन, प्रणायाम का प्रशिक्षण आर्य वीर दल पानीपत के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। अंतिम दिन समापन समारोह के अवसर पर विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने विद्यार्थियों को राजा भोज के जीवन के बारे में विस्तार से बताया। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को शहीद भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, वीर हकीकत के जीवन के बारे में बताया और देशभक्ति की भावना को जागृत करने की प्रेरणा दी। ज्ञान विद्या पब्लिक स्कूल के मुख्याध्यापक श्री संदीप कुमार जी ने बच्चों को आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी और सभी का धन्यवाद किया।

अगला शिविर 28 से 30 दिसंबर 2015 तक गांव नांगल खेड़ी (गढ़ी) में स्थित शांति पब्लिक स्कूल में लगाया गया। इस शिविर में स्कूल के 150 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, चंद्र नमस्कार आदि का प्रशिक्षण सुयोग्य व्यायाम शिक्षक श्री महावीर आर्य द्वारा दिया गया। जिसमें सभी विद्यार्थियों ने बड़ी लगन व मेहनत से प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने आर्य समाज और महर्षि दयानंद के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रांतीय बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी पद्मावती के जीवन पर प्रकाश डाला। अंत में शांति पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री विनोद कुमार पहल ने सभी का धन्यवाद किया। इस अवसर पर डी.पी. जगदीश चहल, पी.टी.आई. संदीप आर्य व स्कूल के सभी छात्र-छात्राएं व अध्यापक मौजूद थे।

इससे आगे बढ़ते हुए अगला शिविर महर्षि दयानंद सरस्वती वरिष्ठ मा. विद्यालय गांव दिवाना में दि. 12 जनवरी 2016 से 16 जनवरी 2016 तक लगाया गया। इस शिविर में स्कूल के लगभग 200 छात्र-छात्राओं को सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार,चंद्र नमस्कार नियुद्धम आदि का प्रशिक्षण आर्य वीर दल पानीपत के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया जिसमें कड़कती ठण्ड में बच्चों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने कहा कि स्वस्थ शरीर ही मानव की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। इसलिए शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नियमित व्यायाम जरूरी है। आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने बच्चों को आर्य समाज और देश के प्रति अपना दायित्व निभाने की प्रेरणा दी। वहीं स्कूल के संचालक श्री देवेंद्र आर्य जी ने सभी का धन्यवाद किया और अपने विद्यालय में प्रत्येक रविवार को साप्ताहिक आर्य वीर दल की शाखा लगाने का निर्णय लिया। इस अवसर पर श्री गुलाब आर्य, राकेश, महीपाल व सभी अध्यापपिकाएं मौजूद रहे।

इसी कड़ी में आगे बढ़ते हुए अगला शिविर दिनांक 18 जनवरी 2016 से 21 जनवरी 2016 तक महर्षि दयानंद पब्लिक स्कूल गांव शेर में लगाया जिसमें स्कूल के 200 छात्र-छात्राओं को भारतीय व्यायाम सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमि नकमस्कार, चंद्र नमस्कार, नियुद्धम आदि का प्रशिक्षण सार्वदेशिक आर्य वीर दल पानीपत के प्रधान व्यायाम शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा दिया गया। यहाँ पर भी गहरी धुंध व ठण्ड के बीच बच्चों ने गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। अंतिम दिन विद्यालय के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने जीवन में आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी। प्रांतीय बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने आजादी की लड़ाई में आर्य समाज के योगदान के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर स्कूल के डायरेक्टर श्री राम सिंह, मैनेजर श्री नरेंद्र सिंह, प्राचार्य श्रीमती सुनीता सेतिया, पिंकी बंसल, सुनील कुमार, अंकिता, डी.पी. जगदीश चहल, पी.टी.आई. संदीप आर्य, गुलाब आर्य मौजूद थे।

आगे बढ़ते हुए अगला शिविर दिनांक 22 जनवरी से 25 जनवरी 2016 को एस.एल. पब्लिक स्कूल गांव सौदापुर में लगाया गया। इस शिविर में 100 विद्यार्थियों ने सर्वांग सुंदर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूडो-कराटे का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आर्य वीर दल पानीपत के प्रधान शिक्षक श्री महाबीर आर्य द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। अंतिम दिन 25 जनवरी को स्कूल के निदेशक आचार्य अभय आर्य जी ने ब्रह्मचर्य जीवन के बारे में विस्तार से बताया। प्रांतीय बौधिकाध्यक्ष आचार्य राजकुमार शर्मा जी ने आर्य वीर दल के इतिहास के बारे में जानकारी दी। अपने सम्बोधन में उन्होंने बताया कि आर्य समाज की रक्षा के लिए 26 जनवरी 1929 ई. को दिल्ली में महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में आर्य वीर दल की स्थापना की थी। इस मौके पर एस.एल. स्कूल के प्रधानाचार्य श्री सुरेंद्र जी ने बच्चों को आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी तथा सभी का धन्यवाद किया। इस मौके पर श्री गुलाब जी, प्रदीप मलिक जी व सभी अध्यापक व छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

- सार्वदेशिक आर्य वीर दल पानीपत

सरफरोशी की तमन्ना

- राम प्रसाद बिस्मल

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी।
हे ईश भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।

श्री राम प्रसाद बिस्मिल बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुन्दर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड्यन्त्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पण्डित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुख-बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान् व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फांसी दी गयी। 18 की शाम को जब आपको दूध दिया गया तो आपने यह कहकर इन्कार कर दिया कि अब मैं माँ का दूध ही पीऊंगा। 18 को आपकी मुलाकात हुई। माँ को मिलते आपकी आंखों से अश्रु बह चले। माँ बहुत हिम्मत वाली देवी थी। आपसे कहने लगी-हरीशचन्द्र, दधीचि आदि बुर्जुर्गों की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दें, चिन्ता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हंस पड़े। कहा, 'माँ! मुझे क्या चिन्ता और पछतावा, मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता। लेकिन माँ! आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा-मेरा सम्बन्ध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आँखों में अश्रु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ।' फांसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा 'वन्दे मातरम्', 'भारत माता की जय' और शान्ति से चलते हुए कहा—

'मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे
बाकी न मैं न रहूं, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र यार, तेरी जुस्तजू रहे।'

फांसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा—I wish the downfall of the British Empire. (मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ।) फिर यह शेर पढ़ा—

'अब न अहले वलवले हैं
और न अरमानों की भीड़।
एक मिट जाने की हसरत,
अब दिले-बिस्मिल में है।

''आर्य भारत में बाहर से आये'' : यह मान्यता देशद्रोह है

– धर्मवीर

(पिछले अंक का शेष)

ऋषि दयानन्दने वे दोत्पत्ति प्रकरण, वे दोत्पत्ति काल के निर्धारण में भारतीय समाज में श्रेष्ठकर्म करने के समय पढ़े जाने वाले संकल्प का उल्लेख किया है, उसमें जब **-आर्यावर्ते जम्बू द्वीपे भरतखण्डे-** शब्दों का पाठ करते हैं, तो सिं है इस देश में आने वाले पहले लोग आर्य ही हैं और उन्होंने ही इस देश का नाम आर्यावर्त रखा। इस देश के बदले गये बाद के नामों की चर्चा तो मिलती है, परन्तु आर्यावर्त या ब्रह्मवर्त से पहले के किसी भी नाम की चर्चा विश्व इतिहास में नहीं मिलती, अतः यह कहना कि भारत में आर्य बाहर से आये-यह पाखण्डपूर्ण कथन है। भारत में आर्य बाहर से आये-यह कहना वदतो व्याघात अर्थात् परस्पर विरोधी है, क्योंकि इस देश का भारत नामकरण भी आर्यों का है, फिर भारत में आर्यों का बाहर से आना कैसे बनेगा।

खडगे ने लोकसभा में आर्यों के बाहरसे आने की जो बात कही, उसका कारण है, आजकल किया जाने वाला दुष्प्रचार। भारत जातिगत आधार पर जो आरक्षण किया गया है, इसको आधार बनाकर इस आन्दोलन को इस देश में चलाया जा रहा है। इसके लिये अमेरिका, योरोप का ईसाई समुदाय बड़ी मात्रा में धन उपलब्ध कराता है। इस कार्य को करने वाले संगठन भारत में बामसेफ और मूल निवासी परिषद् है। पाश्चात्य लोगों ने ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, योरोप के अनेक विश्वविद्यालयों में इस मूलनिवासी लोगों के इतिहास के अनुसन्धान के लिए अनेक शोधपीठ भी स्थापित किये हैं, जिनमें डी.एन.ए. तक मूल निवासियों का आर्यों से पृथक् होने की बात कही गई है। ये संगठन ज्योतिबा फूले और डॉ. अम्बेड़कर के नाम से लोगों को हिन्दू समाज से अलग करने का प्रयास करते हैं। दलित प्रकाशन के नाम से प्रकाशित दो सौ से भी अधिक पुस्तकों में यही समझाने का प्रयास किया है कि स्वतन्त्रता संग्राम का दलितों से कुछ लेना-देना नहीं है, दलितों का उद्धार अंग्रेजों ने किया है। डॉ. अम्बेडकर ने ही उनके लिये कार्य किया है, समाज में सवर्ण कहलाने वाले लोगों ने उनका शोषण किया है। अंग्रेज शासन उनके लिये अच्छा था, स्वतन्त्रता संग्राम तो सवर्णों की अपने अधिकारों की लड़ाई थी, चाहे रानी झाँसी की लड़ाई हो या महाराणा प्रताप व शिवाजी की। इनके साहित्य में ऋषि दयानन्द या स्वामी श्रद्धानन्द और आर्यसमाज या किसी अन्य संस्था द्वारा किये समाज सुधार की चर्चा नहीं मिलती। इनके साहित्य में ऋषि दयानन्द को ब्राह्मण और सवर्णों का पक्षधर कहकर निन्दा की गई।

वर्तमान में इस कार्य को करने वाले दो संगठन हैं—एक बामसेफ और दूसरा है-मूल निवासी परिषद्। ये निरन्तर दलित जातियों में भारत विरोधी, सवर्ण और असवर्ण के मध्य पृथकतावादी प्रवृत्ति बढ़ाने का कार्य करते हैं। इसके लिये इनका सैंकड़ों की संख्या में साहित्य प्रकाशित कर वितरित किया जाता है। इसी प्रकार की फिल्में बनाकर दिखाई जाती हैं। प्रतिवर्ष देश के विभिन्न भागों में इनके अधिवेशन होते हैं, जिनमें दलित समाज के लोगों को भाग लेने के लिये प्रेरित किया जाता है। सवर्ण या भिन्न विचार के लोगों को ये लोग अपने कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति नहीं देते। पुस्तक मेलों में दलित प्रकाशनों की दुकानों पर बिकने वाले साहित्य से इस बात को समझा जा सकता है।

इस कार्य को करने वाली संस्था बामसेफ, जिसका पूरा नाम ऑल इण्डियन बैकवर्ड एण्ड माइनॉरिटीज एम्प्लाइज फैडरेशन है, जिसका निर्माण

बहुजन समाजवादी पार्टी के संस्थापक कांशीराम और डी.के. खापडे ने अमरीकी सहायता से 1973 में किया था। इसका उद्देश्य आरक्षण का लाभ उठाकर भारतीय समाज में सवर्ण-असवर्ण की खाई को गहरी करना और समाज में विघटन के बीज बोना था। सामाजिक लोगों को अभी तक इसका विशेष परिचय नहीं है। जो परिचित भी हैं, वे इनके कार्य को विशेष महत्व नहीं देते, परन्तु खडगे ने ससद में बता दिया, यह विचार समाज में तेजी से घर कर रहा है। समाज और सरकार को इसका निराकरण करने के लिये सक्रिय होना होगा।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि एक आर्य के अतिरिक्त अपने देश के लिये इतने सुन्दर शब्दों का प्रयोग कोई कर सकता है, जैसा राम ने किया था। राम ने कहा-जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। इतना ही नहीं, आर्यों ने अपने भारतवर्ष को देवताओं के लिये भी ईर्ष्या का कारण बताया-

गायन्ति देवाः किल गितकानि धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।

(साभार : परोपकारी से)

पेट ही पूजा है

- प्रो. शामलाल कौशल

पंजाबी में एक कहावत है 'पेट ना पईंयां रोटीयां, सबे गलां खोटीया' अर्थात् जब तक पेट पूजा ना हो जाये कोई भी बात अच्छी नहीं लगती। यह सारा संसार 'पेट पूज' के सिद्धांत के सहारे ही चल रहा है। यह तो ठीक है कि दुनिया में जो कुछ हो रहा है वह सब पेट पूजा के लिये ही हो रहा है। किसी को अभी पेट पूजा की चिन्ता है, किसी को कल की, किसी को यह चिन्ता है कि जब वे बूढ़े हो जायेंगे, काम धन्धा कुछ हो ना सकेगा, हाथ-पैर साथ ना देंगे, तब पेट पूजा कैसे होगी। सच पूछा जाये तो जन्म जन्मांतर से हमारे समाज में बेटियों के मुकाबले में बेटों की ज्यादा चाहना है, इसके पीछे भी पेट पूजा है। लोगों को यह चिन्ता सताती है कि विवाह के बाद बेटियां तो अपने ससुराल की शोभा बढ़ायेंगी तो ऐसे में पुत्र ही कमाकर उनकी पेट पूजा में सहायता करेगा। यह बात अलग है कि विवाह के बाद बेटा स्वयं अपनी अलग घर गृहस्थी बसा लेता है। ऐसे में बुर्जुग लोगों को पेट पूजा की चिन्ता सताती रहती है। खाली पेट तो बंदे को नींद भी नहीं आती। इसलिये जो पेट पूजा के लिये अपना प्रबन्ध स्वयं नहीं कर पाते वे भीख मांगते, मंदिरों, मस्जिदों या गुरुद्वारों द्वारा आयोजित लंगरों में जाकर छक कर पेट पूजा करते हैं। कईयों के पेट तो भैंस से भी बड़े होते हैं। खाते-खाते ना तो थकते हैं और ना ही पेट भरता है। एक बार एक आदमी प्रीति भोज में गया लोग आयें, खाएं और चले जायें। लेकिन यह महाशय ऐसे थे कि खाने की टेबल पर डटे हुए थे। उसे किसी और आदमी ने ताड़ लिया और उसके पास जाकर पूछा 'महाशय, क्या आप की अभी तक पेट पूजा पूरी नहीं हुई क्या? पेट नहीं भरा क्या? उसने जवाब दिया, "नहीं ऐसी बात नहीं। जो निमंत्रण पत्र मिला था उस पर लिखा था प्रीति भोज । बजे से 3 बजे दोपहर मैं तो उसी के मुताबिक ही चल रहा हूँ।" वाह, भई वाह! कमाल कर दिया। पेट पूजा के लिये कोई कुछ काम धंधा करता है। किसी किसी परिवार में कोई ना कोई ऐसा मुश्टण्डा ज़रूर होता है जो करता कराता तो कुछ है नहीं। हां, उसका सारा जोर अपनी पेट पूजा में ही गुजर जाता है। अच्छा खाता है, अच्छा पीता है, अच्छा पहनता है, उसका काम विवाह, शादी समारोह आदि में जाकर पेट बादशाह को खुश करना होता है। ऐसे

आदमी तो किसी रस्म क्रिया पर भी छक कर पेट पूजा करते हुए देखे जा सकते हैं। पेट पुजारियों में एक खासियत होती है कि जब वे खाने बैठ जाते हैं तो कोई शर्म, लिहाज, जान पहचान या रिश्तेदारी का ख्याल नहीं करते। कई पेट पुजारी तो ऐसे होते हैं कि रात को सोते हुए भी खाने के लिये उठ बैठते हैं। एक पेट पुजारी से अपने बेटे के विवाह के अवसर पर उसके मित्र ने पूछा, 'क्यों भाई, तुमने कुछ खाया-पिया या नहीं?" उसने उत्तर दिया "बस, कुछ खास नहीं", मित्र ने कुतुहलवश पूछ ही लिया, "फिर भी बताओ, क्या-क्या खाया?" उसका जवाब था, "मैंने दस पूरीयां खाईं, चाट, दही बड़े, कुल्फी, रबड़ी, जलेबी, कोल्ड ड्रिंक्स, गुलाब जामुन और ऐपल जूस लिया है।" मित्र ने कहा, "इतना कुछ तो खा ही लिया। क्या अब भी कोई कसर रह गई?" उसका उत्तर था "मैंने पापड़ तो खाया नहीं?" हद कर दी पेटू महाशय, आपने भी। कईयों के पेट में कीड़े होते हैं। वे जितना भी खाते पीते जाएं उनका पेट भरता नहीं। और कई ऐसे होते हैं, उन्हें लक्कड़ हज़म, पत्थर भी हज़म हो जाता है। पता नहीं उनके पेट में कोई फालतू थैली फिट कर रखी है परमात्मा ने। कई लोगों को हराम की खाने की आदत लग जाती है। उन्हें कुछ ज्ञान-ध्यान तो होता नहीं, भगवे कपड़े पहन, गले में माला तथा माथे पर टीका लगाकर पेट पूजा के लिये घर-घर अलख जगाते हैं। पेट पूजा के लिये कोई अनाथालय, कोई पिंगलवाड़े, कोई स्कूल, कोई अस्पताल,कोई महिलाश्रम खोलकर बैठे हैं। सेवा की सेवा, पेट पूजा की पेट पूजा। राजनेता पेट पूजा के लिये ही चुनाव लड़ते हैं। बेशक मुंह से वे लोगों की सेवा की बात करते हों। अगर पेट पूजा की मजबूरी ना हो तो शायद दुनिया की सारी गतिविधियां रुक जायें। इसलिये 'पेट ही पूजा है।' ●

गायत्री-गौरव-महिमा

– स्वामी आत्मानन्द सरस्वती

गायत्री के नाम और अर्थ

गायत्री को सावित्री, गुरुमन्त्र, वेदमुख और वेदमाता भी कहते हैं। (1) गायत्री का अर्थ है—गीयते, त्रायते अर्थात् जिससे समस्त संसार का बखान हो और रक्षा हो उसे गायत्री कहते हैं। (2) सावित्री का अर्थ है—उत्पन्न करने वाली। (3) गुरुमन्त्र वह है जिसका परमात्मा ने गुरु रूप में आदि सृष्टि में ऋषियों को ज्ञान दिया। इसलिए गायत्री का अर्थ ज्ञान भी है। (4) वेदमुख का अर्थ है वेद की वाणी, जैसे शरीर में वाणी सबका व्याख्यान करती है और सबके आन्तरिक भावों की अनुवादिका है वैसे ही गायत्री वाणी भी वेदों की और सारे वेदों के भावों का वर्णन करती है। (5) वेदमाता इसलिये कहते हैं कि प्रत्येक ऋषि को परमात्मा ने यही मन्त्र गुरुमन्त्र के रूप में दिया था।

गायत्री में तीन अक्षर हैं— ग+य+त्र। "ग" से गति और "य" तथा "त्र" से यात्री। अर्थात् जिससे यात्री की गति हो वह गायत्री है। सभी मनुष्य संसार के यात्री हैं और संसार एक यात्रातीर्थ है। गायत्री मन्त्र मति को देने वाला और ज्ञान-नेत्र खोलने वाला है। गुरु से यहाँ आशय वास्तविक गुरु, सतगुरु परमात्मा से है किसी सांसारिक गुरु से नहीं। सच्चा सांसारिक गुरु भी इसी मन्त्र का उपदेश करता है और यह कह देता है कि तेरा और मेरा दोनों का गुरु परमेश्वर है और उसी का यह मन्त्र तेरी और मेरी दोनों की गति के लिए है। इसके तीन अक्षरों का आशय यह है "ग" से गंगा "य" से यमुना और "त्र" से त्रिवेणी। ये तीनों ही हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ माने जाते हैं। तीर्थ वास्तव में वही है, जिसके द्वारा मनुष्य दुखों से छूटकर तर जायें। कहा भी है—जनाः यैः तरन्ति तानि तीर्थानि- अर्थात् जिनके द्वारा तर जाये वही तीर्थ है। इसका तीसरा अर्थ है "गय" अर्थात् इन्द्रियों और प्राण का बलयुक्त होना और "त्री" का अर्थ है रक्षा करना। यह इन्द्रियों और प्राणों के बल की रक्षा करती है इसलिये इसे गायत्री कहते हैं। ●

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्

श्रीमान्/श्रीमती _____

_____ भा _____

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद–121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

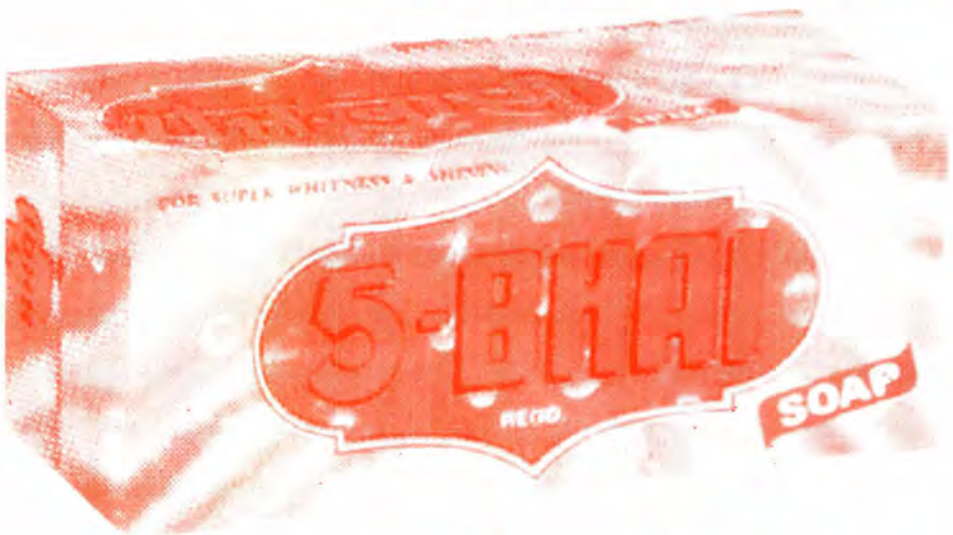

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37–E, सैक्टर 6, फरीदाबाद–121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :–

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर–24, फरीदाबाद पिन – 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'XYZ OFFSET PRINTERS', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद–121006 से प्रेषित।